Recommended by T. B. C. Dt. for VIII Cas

संस्कृत प्रदीपिका

आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्रिणा
विरचिता

फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी
इति प्रथितया श्रेण्या प्रकाशिता

৯০৮-৪

संस्कृत प्रदीपिका

प्रथमा

आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्रिणा

विरचिता

फ्रैन्क ब्रादर्स एण्ड कम्पनी

इति प्रथितया श्रेण्या प्रकाशिता

१९९६

Published by—

FRANK BROS. & Co.,

Chandni Chowk, Delhi.

Printed by—

Acharya Rajendra Nath Shastri

ARYA PRINTING PRESS,

Charkhewalan, Delhi.

भूमिका

भाषा विज्ञान और विषय प्रतिपादन की दृष्टि से संस्कृत भाषा का जितना महत्त्व है उतना ही उसकी शिक्षण शैली के विकृत होने से वह घटता जा रहा है। युक्त प्रान्त में शिक्षा मन्त्री माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी तथा शिक्षा सुधार समिति के सतत उद्योग से उसमें कितने ही उपयोगी परिवर्तन हो गये हैं। आज प्रायः समस्त संस्कृत प्रेमी संस्कृत की रटने की धारणा से उद्विग्न हैं। स्कूल के छात्र भी इसी लिये संस्कृत पढ़ने से दूर भागते हैं, उन की बुद्धि में यह बात बिठा दी गई है, कि संस्कृत के रूप इतने कठिन हैं कि सारी आयु भी कण्ठस्थ करते रहें तो समाप्त नहीं हो सकते।

इस अशुद्ध धारणा को निर्मूल करने तथा तीन वर्ष की परीक्षित सफल संस्कृत शिक्षण की सुगम रीति को उपस्थित करने के लिये 'संस्कृत प्रदीपिका' माला का प्रकाशन आरम्भ किया है। इसमें सन्देह नहीं कि संस्कृत शब्द भण्डार अनन्त विस्तार वाला है। पर इस के साथ ही इस बात को भी भूलना न चाहिये कि उसका विस्तार जहाँ नव जिज्ञासु के हृदय में भय का सञ्चार करने वाला है वहाँ वह एक अभूत पूर्व सुगमता भी उपस्थित करता है; उस में एक ही प्रकार के शब्द इतने अधिक हैं कि उसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग जानकर उन्हीं में हम अपने भाव भली भाँति प्रकट कर सकते हैं, जैसे संस्कृत में अकारान्त शब्द तथा भ्वादिगण के धातु ही इतने अधिक हैं कि उन्हीं में भली

भाँति भावों का प्रकाशन किया जा सकता है। पाठक देखेंगे कि प्रदीपिका प्रथम भाग में अकारान्त पुल्लिङ्ग नपुंसक तथा आकारान्त स्त्री लिङ्ग, साधारण सार्वधातुक लकार तथा अव्ययों में ही समस्त पुस्तक समाप्त कर दी गई है, और भावाविष्कार में किसी प्रकार की कमी नहीं आने पाई है। किसी भी (Classical) भाषा को सीखने के लिये व्याकरण की अनिवार्यता सर्वसम्मत है, पर इस का यह तात्पर्य नहीं कि बस व्याकरण के क्लिष्ट नियम तथा हर प्रकार के रूप रटवाने से भाषा आजायगी। जहाँ भाषा के लिये व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है वहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि भाषा ज्ञान के उपरान्त ही व्याकरण के नियम चरितार्थ किये जा सकते हैं, अतः सर्व प्रथम भाषा को साहित्यिक शैली पर सीखकर अभ्यास और भाषा व्यवहार की कमी के कारण रही हुई त्रुटियों को व्याकरण ज्ञान से शुद्ध कर लेना चाहिये। दूसरे शब्दों में इस का भाव यह है कि जब तक व्याकरण का साहित्य में प्रयोग न किया जाये तब तक व्याकरण ज्ञान भी अधूरा ही रहता है।

इसी त्रुटि को दूर करने के लिये पाठों का क्रम व्याकरण की दृष्टि से रखा है जिसको 'पाठ का माध्यम्' नाम से पुकारा है, और पाठों को साहित्यिक ढंग पर ही संकलन करने का उद्योग किया गया है। इस प्रकार से पाठों में सोपान पंक्ति के ढंग पर सुन्दर क्रमिक उन्नति आ गई है। जिस से बालक अनायास ही क्रमिक उन्नति करता जायगा।

भिन्न विषयक वाक्यों के संग्रह को पाठ में रखना बालकों

में अरुचि उत्पन्न करता है, अतः आरम्भ से ही इस बात का उद्योग किया गया है, कि वाक्य एक विषय पर परस्पर सम्बद्ध हों जिस से पाठ में कथा का सा रस आता रहे, और रुचि बढ़ती जाये।

संस्कृत का आरम्भ करने वाले विद्यार्थी प्रायः आर्य भाषा (हिन्दी) या अंग्रेज़ी जानने वाले होते हैं, वह कभी द्विवचन का प्रयोग नहीं करते। आरम्भ में ही द्विवचन का प्रयोग उन के लिये एक कठिन समस्या हो जाती है। अतः प्रथम भाग में द्विवचन का प्रयोग सर्वथा ही छोड़ दिया गया है। इस से छात्र संस्कृत को पराई न समझ अपनी ही समझेंगे।

'सन्धि' भी संस्कृत साहित्य का महत्त्व पूर्ण विषय है, और इस में सन्देह नहीं कि इस से भाषा में माधुर्य और सरसता आती है, पर इस से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस से भाषा में क्लिष्टता आ जाती है। अतः आरम्भ में इस को छोड़ देना और भाषा से परिचय हो जाने पर शनैः२ इसका अभ्यास कराना श्रेयस्कर होगा। इसी शैली का अवलम्बन इस माला में किया गया है।

पाठ्य पुस्तक की उत्तमता के साथ ही अध्यापक की पढ़ाने की प्रबल इच्छा भी पढ़ाने में सहायक होती है अतः पाठ के अनन्तर उसी पाठ के विषय पर पाठ में आये वाक्यों के आधार पर छात्रों से संस्कृत में वार्तालाप करना अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है। पाठ के भली भाँति तय्यार होने के साथ ही साथ बात चीत करने से संस्कृत में बोलने का साहस तथा उत्साह होता है।

ऊहा तथा व्याकरण नियम को स्वाभाविक रूप में चरितार्थ करने के लिये वाक्यपूर्ति को अभ्यास में स्थान दिया गया है।

संस्कृत भाषा के मातृ भाषा न होने से विचार संस्कृत में उदय नहीं होते, मातृ भाषा हिन्दी में ही होते हैं। अतः हिन्दी से संस्कृत बनाने का अभ्यास भी बराबर होना चाहिये। इसलिये अनुवाद को भी पाठों के मान (standard) के अनुसार अभ्यास में रखा गया है।

पाठों के विषय भी व्यवहारोपयोगी तथा प्राकृतिक छाँटे गये हैं, जिस से समझने में सरल तथा Direct method के आधार पर प्रश्नोत्तर रूप में पढ़ाने के लिये उपयोगी हों।

इन विशेषताओं से युक्त पाठ्य पुस्तक का अभाव था अतः यह प्रयास किया गया है। सफलता के विषय में शिक्षा परीक्षक ही जाँच कर सकेंगे।

इन पुस्तकों के सम्पादन में स्वनाम धन्य महामहोपाध्याय श्री पं० लक्ष्मीधर जी शास्त्री एम० ए०; एम० ओ० एल०, अध्यक्ष संस्कृत विभाग देहली यूनिवर्सिटी ने जो लाभप्रद संकेतों तथा शुभ सम्मतियों से प्रोत्साहित किया है, उस के लिये हृदय उनका सदा आभारी रहेगा। जिन पाठ्य पुस्तकों तथा लेखकों से मैंने सहायता ली है, उन सब का मैं कृतज्ञ हूं।

अन्त में प्रसिद्ध प्रकाशक श्रेणी फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी की कृतज्ञता प्रकाशन भी अनिवार्य है। जिसने अश्रान्त नोदन से यह ग्रन्थ लिखा ही लिया!

राजेन्द्रनाथ शास्त्री

विषय-सूची

पाठः		पृष्ठम्
	वर्णज्ञानम्	१
	वर्णोच्चारणस्थानम्	१
	स्वरव्यञ्जनयोः मेलनम्	२
	व्यञ्जनव्यञ्जनयोश्च ,,	२
१	परिचिताः क्रियाः (क)	५
२	परिचिताः क्रियाः (ख)	६
३	परिचिताः क्रियाः (ग)	८
४	प्रातः (क)	१०
५	प्रातः (ख)	१२
६	मन्दिरम्	१४
७	आरामः	१६
८	शरीराङ्गानि	१८
९	व्यायामः	२०
१०	दावानलः	२२
११	सम्बन्धः	२४
१२	महानसः	२६
१३	सुदिनम्	२९
१४	जीवालयः	३१

१५. सहभोजः	३४
१६ पाठशालम्	३६
१७ आपणः	३९
१८ चान्द्रिका चतुष्पथः	४२
१९ सभाभवनम्	४४
२० चित्रपटः	४६
२१ यमुना स्नानम्	४९
२२ श्लोकाः	५२
२३ वाग्वरः	५४
२४ चिकित्सालयः	५६
२५. वाचनालयः	५८
२६ विवादः	६१
२७ धूर्तः शशकः	६३
२८ वीरभद्रः	६६
२९ बाल कृष्णः	६८
३० सदुपदेशः	७१
३१ व्याकरणम्	७४—१८

अथ वर्णज्ञानम्

स्वरः

ह्रस्वाः—अ इ उ ऋ लृ एकमात्रिकाः

दीर्घाः—आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ द्विमात्रिकाः

प्लुताः—अ३ इ३ उ३ ऋ३ लृ३ ए३ ऐ३ ओ३ औ३ त्रिमात्रिकाः

इति स्वरस्य प्रकारत्रयम्

वर्णोच्चारण-स्थानम्

क् ख् ग् घ् ङ् = क वर्ग, अ, ह्, : (विसर्ग) कण्ठ से बोले जाते हैं

च् छ् ज् झ् ञ् = च वर्ग, इ, य्, श्, तालु ,,

ट् ठ् ड् ढ् ण = ट वर्ग, ऋ, र्, ष् मूर्धा ,,

त् थ् द् ध् न् = त वर्ग, लृ, ल्, स् दन्त ,,

प् फ् ब् भ् म् = प वर्ग उ ≍ प (उपध्मानीय) ओष्ठ ,,

ए, ऐ कण्ठ+तालु ,,

ओ, औ कण्ठ+ओष्ठ ,,

व दन्त+ओष्ठ ,,

ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, ं (अनुस्वार) नासिका से भी

संकेतः—स्पष्ट उच्चारण के लिये व्यञ्जनों से पहले स्वर लगाकर उच्चारण करो—जैसे अक्, अट्,

स्वरव्यञ्जनयोर्मेलनम्

व्यञ्जनं+स्वरः

१. स्वर रहित व्यञ्जन के साथ ही (मात्राओं के रूप में) स्वर मिलाये जाते हैं।

(क्+अ)=क + (र्+अ)=र—कर
(ह्+अ)=ह + (र्+इ)=रि—हरि
(म्+अ)=म + (र्+उ)=रु—मरु
(च्+इ)=चि + (र्+अ)=र—चिर
(ग्+इ)=गि + (र्+इ)=रि—गिरि
(क्+उ)=कु + (र्+उ)=रु—कुरु
(क्+ऋ)=कृ + (ष्+इ)=षि—कृषि

व्यञ्जनं+व्यञ्जनम्

क्+व=क्व , ह्+र्+द=ह्रद आ+ज्+ञा=आज्ञा
प+क्+व=पक्व , ह+र्+ष=हर्ष य+ज्+ञ=यज्ञ
च+क्+र=चक्र , क+र्+म=कर्म क+क्+षा=कक्षा
श्+र+म=श्रम , क्+ल+म=क्लम ल+क्+ष=लक्ष
क्+र+म=क्रम , कु+त्+र=कुत्र ग+ङ्+गा=गङ्गा
कृ+ष्+ण=कृष्ण , धू+र्+त=धूर्त य+त्+न=यत्न

अभ्यासः

मौखिक—

उच्चारण करके भेद बताओ—

क. ई, अ, उ३, इ, इ३, ऊ, उ, ऋ३, ऋ, ऐ, ए, ओ३, ओ।

ख. व, ब, ख, प, च, श, स, न, ण, य, ञ, झ, ग्य।

ग. कुत्र, कतर, चक्र, सुकर, कर्प, कृपि, हृत, हरित, हित, कृत।
क्रीत, श्री, मिश्री, शिरी, कृष्ण, कर्पण, रावण, वन, यज्ञ, योग्य, ऋषि, राखी, ईश्वर, शवर, अस्त, असत्।

२. राम, कृष्ण, चन्द्र, नरेन्द्र, शास्त्री, यज्ञेश्वर, लताभ्याम् में कौन २ अक्षर हैं।

३. रिक्त स्थान में अक्षर डालकर सार्थक शब्द बनाओ तथा शुद्ध रूप में लिखो—

स्वरः — य्—ग, घ्—ट, विद्य्—लय, यज्—र् वेद, ग्—यन, वृक्ष्—, — दयान, पुस्त्—क, पर्— याम, प्—रण —नन्द, ग्—ह, अध्य्—यक, स्—त्र, स्तर्—, लक्ष्—मी।

व्यञ्जनम् — ले —अनी, पा—र, म—उ, वृ—प, कृ—ण, च—र, पु—उप, प—व।

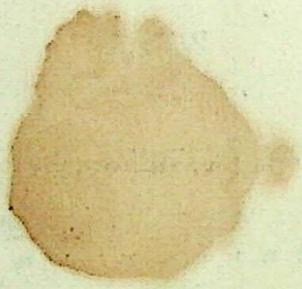

संस्कृत प्रदीपिका

प्रथमा

प्रथमः पाठः

(पाठस्थमाध्यम्–उत्तमपुरुषैकवचनम्)

परिचिताः क्रियाः (क)

अध्यापकः—त्वं किम् आचरसि ?

प्रथमः कुमारः—अहम् पठामि ।

द्वितीयः कुमारः—अहं नमामि ।

अन्यः कुमारः—चलामि अहम् ।

अन्यः कुमारः—वदामि अहम् ।

अन्यः कुमारः—अहम् धरामि ।

अध्यापकः—कुमार ! त्वं किम् आचरसि ?

प्रथमः कुमारः—श्रीमन् ! अहम् लिखामि ।

द्वितीयः कुमारः—श्रीमन् ! अहम् पिबामि।

तृतीयः कुमारः—अहम् हरामि ।

अन्यः कुमारः—श्रीमन् ! अहम् न लिखामि।

अन्य कुमारः— श्रीमन् न अहम् पठामि ।

अन्य कुमारः—श्रीमन् ! न हरामि अहम्।

अध्यापकः—सत्यव्रत ! त्वं किम् आचरसि ?

सत्यव्रतः—श्रीमन् ! अहम् गायामि।

अध्यापकः—त्वं रे ! भीष्म ?

भीष्मदेवः—श्रीमन् ! अहं हसामि ।

अध्यापकः—त्वं च मनोहर ?

मनोहरः—अहम् खेलामि श्रीमन् !

अभ्यासः

१. संस्कृत बनाओः—

मैं चलता हूँ। मैं पढ़ता हूँ। श्रीमन्! मैं लिखता हूँ। श्रीमन् मैं नहीं चलता। मैं गाता हूँ। मैं खेलता हूँ। श्रीमन्! मैं नहीं हंसता। मैं नहीं गाता हूँ। मैं नहीं धरता। मैं नहीं पीता। मैं झुकता हूं। मैं धरता हूँ।

२. व्यायामः—

अहं चलामि। पठामि अहम्। अहं हसामि। अहं लिखामि। अहं खेलामि। अहं हरामि। अहं गायामि।

३. प्रश्नाः—

त्वं किम् आचरसि ? अस्य भिन्नं भिन्नम् उत्तरं देयम्।

द्वितीयः पाठः

(पाठस्यमाध्यम्—मध्यमपुरुषैकवचनम्)

परिचिताः क्रियाः (ख)

अध्यापकः—कुमार ! बोधसि, अहम् किम् आचरामि ?

प्रथमः कुमारः—श्रीमन् ! त्वं वदसि।

द्वितीयः कुमारः—श्रीमन् ! त्वं पठसि ।
तृतीयः कुमारः—श्रीमन् ! त्वं चलसि ।
चतुर्थः कुमारः—श्रीमन् ! त्वं हससि ।
अन्यः कुमारः—श्रीमन् ! त्वं पिबसि ।
अध्यापकः—भीष्मसिंह ! अहं किम् आचरामि !
भीष्मसिंहः—श्रीमन् ! त्वं नमसि ।
अध्यापकः—अहं किम् आचरामि रे सत्यव्रत !
सत्यव्रतः—श्रीमन् ! त्वं गायसि ।
मनोहरः—श्रीमन् ! त्वं पृच्छसि ।
वीरेन्द्रः—श्रीमन् ! न खेलसि त्वम् ।
धीरेन्द्रः—श्रीमन् ! त्वं न हससि ।
योगेन्द्रः—श्रीमन् ! त्वम् वदसि चलसि च ।

सङ्केतः—यथोत्तरमध्यापकेनानाय्यम्, तदवलोक्य छात्राः उत्तरवाक्यानि उच्चारयन्तु ।

अभ्यासः

क. संस्कृत बनाओः—

श्रीमन् तुम गाते हो । रघुवीर ! तू खेलता है । वीरेन्द्र ! तू हंसता है । योगेन्द्र ! तू नहीं चलता । वीरेन्द्र ! मैं नहीं बोलता । मैं नहीं चलता । मैं लिख रहा हूँ । मोहन ! तू क्या कर रहा है । रघुराज ! मैं पढ़ता हूँ । लिखता नहीं हूँ । श्रीमन् ! मैं जाता हूँ ।

ख. वाक्य पूर्ति करोः—

अहं ..... श्रीमन् ! ..... गच्छसि । गायामि..... । त्वं..... श्रीमन् । पठामि..... । नमसि..... । अहम्..... लिखामि । त्वं लिखसि.....च ।

ग. व्यायामः—

अहं नमामि रे सत्यव्रत ! । देवदत्त ! त्वं चलसि । अहं वदामि । अहं लिखामि । हसामि पठामि अपि ।

घ. प्रश्नाः—

विवधाः क्रियाः कुर्वाणोऽध्यापकः पृच्छेत् अहं किम् आचरामीति ।

तृतीयः पाठः

(पाठस्यमाध्यम्—प्रथमपुरुषैकवचनम्, गतञ्च वचनद्वयम्)

परिचिताः क्रियाः (ग)

अध्यापकः—रघुवीर ! बोधसि ? बलवीरः किम् आचरति ?
रघुवीरः—श्रीमन् ! अहम् बोधामि, बलवीरः पठति ।
धर्मवीरः—श्रीमन् ! बलवीरः लिखति पठति न ।
अध्यापकः— रे बलवीर ! किं त्वं न पठसि ?
बलवीरः—श्रीमन् ! अहं लिखामि पठामि न ।
अध्यापकः—वीरेन्द्र ! धर्मेन्द्रः किम् आचरति ?
वीरेन्द्रः—श्रीमन् धर्मेन्द्रः वदति पठति न ।

धर्मेन्द्रः—श्रीमन् अहम् पठामि वदामि न।

वीरेन्द्रः—धर्मेन्द्र ! त्वं वदसि पठसि च न।

अध्यापकः—सत्यं कथयति वीरेन्द्रः। अस्तु, सत्यव्रतः किम् आचरति रघुवीर ?

रघुवीरः—श्रीमन् सत्यव्रतः खेलति।

अध्यापकः—रघुवीर ! त्वम् किम् आचरसि ?

रघुवीरः—श्रीमन् ! अहम् पठामि।

अध्यापकः—रे वेद ! अहम् किम् आचरामि, रामः च किम्।

वेदप्रकाशः—अहम् बोधामि, त्वम् अध्यापयसि, रामः च नमति।

अध्यापकः—रे लक्ष्मण ! किम् रामदेवः चोरयति।

लक्ष्मणः—रामदेवः न चोरयति।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

क्या रामदेव लिखता है पढ़ता नहीं।

रे रघुवीर ! तू हंसता है बोलता नहीं।

क्या मैं नहीं खेलता ? रामदेव पढ़ता है और मैं लिखता हूँ।

तू खेलता है और मैं हंसता हूँ।

वह चुराता है और तू रखता है। मैं नमस्कार करता हूँ, तू चलता है। रामदेव न पढ़ता है न लिखता है। न मैं खेलता हूँ न रघुवीर।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

पठति —। चलामि —। रघुवीरः — । अहम् —।

त्वम् — । — लिखसि ? । रामदेवः — । अहम् न —।

(ग) व्यायामः—

धर्मवीरः नमति । रघुवीरः पठति । अहम् चलामि । बालः लिखति । योगेन्द्रः खेलति ।

(घ) प्रश्नाः—

एकः छात्रः विविधाः क्रियाः कुर्याद् "युद्धवीरः किम् आचरति ?" इति अध्यापकः अन्यान् छात्रान् पृच्छेत् ।

चतुर्थः पाठः

(पाठ्यमाध्यम्—प्रथमपुरुषबहुवचनम्, अतीतञ्च ।)

प्रातः (क)

अध्यापकः—अयि मोहन ! ते बालाः किम् आचरन्ति ।

शिष्यः—गुरुवर ! ते बालाः पठन्ति, न च क्रीडन्ति ।

अन्यः—न हि गुरुदेव ! नमन्ति पूर्वम् ते बालाः पश्चात् पठन्ति ।

अन्यः—न हि गुरुदेव ! पूर्वम् ते बालाः गायन्ति पश्चात् नमन्ति ।

अध्या०—सत्यं रे शिष्याः ! पूर्वम् ते गायन्ति, पश्चात् नमन्ति, पुनः च पठन्ति, अस्तु ।

अयि वत्स ! ते विहगाः किमाचरन्ति, वानराः च किम् ।

शिष्यः—महामान्य ! ते विहगाः मधुरम् कूजन्ति, वानराः च क्रीडन्ति ।

अन्यः—गुरुवर ! ते विहगाः गायन्ति वानराः च धावन्ति ।

अध्या०—रे मोहन ! यदा भास्करः उदयति तदा कीदृशः भवति ?

मोहनः—गुरुवर ! यदा भास्करः उदयति तदा रक्तः भवति ।

MURARI ART DELHI

गुरुः—अयि सोहन ! यदा चन्द्रः उदयति तदा कीदृशः भवति।

सोहनः—भगवन् ! यदा चन्द्रः उद्गच्छति तदा शुभ्रः भवति।

गुरुः—अयि वीरेन्द्र ! यदा सूर्यः निस्सरति तदा त्वम् किम् किम् आचरसि।

वीरेन्द्रः—देव ! यदा सूर्यः निस्सरति तदा अहम् सन्ध्यायामि।

गुरुः—साधु रे ! वीरेन्द्र ! साधु।

अभ्यासः

(क) वाक्य पूर्ति करोः—

बालाः — । गायन्ति — । वानराः —। — चलति।

उद्गच्छति — । अहम् — । लिखसि — । रघुवीरः —।

(ख) संस्कृत बनाओः—

जब सूर्य निकलता है तो लाल होता है। मनुष्य देखते हैं और प्रसन्न (प्रसीद) होते हैं। सुशील बालक सन्ध्या करते नमस्कार करते और पढ़ते हैं। पक्षी गाते हैं। बन्दर नाचते हैं। पहलवान (मल्ल) दौड़ते हैं। पथिक चलते हैं। मन्द २ हवा चलती है। पर मित्र तू निष्क्रिय बैठा है कुछ नहीं करता।

(ग) व्यायामः—

छात्राः वानराः इव कूर्दन्ति। शिष्याः नमन्ति। मोहनः सन्ध्यायति, सूर्यम् च नमति।

(घ) प्रश्नाः—

'यदा सूर्यः उदयति तदा बालाः किम् किम् आचरन्ति ?, इति सर्वान् छात्रान् अध्यापकः पृच्छेत् ।

पञ्चमः पाठः

(पाठस्यमाध्यम्—मध्यमोत्तमयोर्बहुवचनम्, अतीतञ्च)

प्रातः (ख)

गुरुः—अयि छात्राः ! यूयम् किम् किम् आचरथ ?

शिष्याः—देव ! वयम् पठामः ।

गुरुः—अयि प्रियाः छात्राः ! वयम् किम् आचरामः ।

शिष्याः—देव ! यूयम् अध्यापयथ ।

रघुवीरः—देव ! यूयम चलथ पठथ पश्यथ च ।

महावीरः—देव ! यूयम् नमथ सरथ च ।

गुरुः—अयि शिष्यवराः ! यूयं पृच्छथ वदथ न च पठथ ।

शिष्याः—सत्यं गुरुवर ! वयं पृच्छामः वदामः इत्थमेव च पठामः ।

गुरुः—अयि रघुवीरमोहनसोहनाः ! यूयम् तत्र कदा गच्छथ किम् च आचरथ ।

शिष्याः—गुरुदेव ! वयं तत्र तदा गच्छामः यदा भास्करः उद्गच्छति रक्तः च भवति । तत्र च वयम् शनैः २ चलामः, श्रान्ताः च उपविशामः, सन्ध्यायामः, पठामः प्रत्यागच्छामः च ।

गुरुः— साधु रे प्रियाः छात्राः साधु। साधु आचरथ। अस्तु! यदा ते अनार्याः छात्राः तत्र आगच्छन्ति तदा ते किम् किम् आचरन्ति?

छात्राः—अयि महामान्य! यदा ते तत्र आगच्छन्ति तदा ते क्रीडन्ति, कूर्दन्ति, उच्छलन्ति, न पठन्ति, न च सन्ध्यायन्ति।

गुरुः—सत्यं! ते म्लेच्छाः, ते इत्थमेव आचरन्ति, वयं च आर्याः न तथा आचरामः।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

गुरु पूछता है हे शिष्यो! तुम क्या कर रहे हो? बालक उत्तर देते हैं- । गुरुवर! हम दौड़ रहे हैं। गुरु बोलता है मैं प्रसन्न होता हूँ, तुम हँसते हो बोलते हो सरकते हो और दौड़ते हो। हम प्रसन्न होते हैं। म्लेच्छ इस प्रकार नहीं खेलते वे असभ्य होते हैं न वे सन्ध्या करते हैं न पढते हैं।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

वयम् — । प्रसीदथ — । — गच्छन्ति । यूयम् — । नमामः —। गायथः — । ते वानराः — । — धावथ । — ध्यायति ।

(ग) व्यायामः—पठितानाम् क्रियाणाम् अभिनयो विधेयः; यूयम् गच्छथ। अहम् क्रीडामि। अहम् हसामि। अहम् अधुना सन्ध्यायामि। वयम् कूर्दामः। शिष्याः? गच्छथ। पठथ इति।

(घ) सब पुरुष व द्विवचन तथा बहुवचनों में निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो

आचर्, पठ्, नम्, चल्, वद्, लिख्, हर्, गाय्, हस्, वद्, अध्यापय्, धाव्, प्रसीद्, ध्याय्।

षष्ठः पाठः

(पाठस्य माध्यम् अकारान्तनपुंसकानां शब्दानां कर्तृत्वं कर्मत्वम् अतीतञ्च)

मन्दिरम्

गुरुः—रे धीरेन्द्र ! अहम् किम् पश्यामि ?

धीरः—गुरुवर ! त्वम् मन्दिरम् पश्यसि।

गुरुः—अयि वीरेन्द्र ! कीदृशम् मन्दिरम्, किम् आचरति मन्दिरम्।

वीरः—गुरुदेव ! मन्दिरम् सुन्दरम् अस्ति, चित्तम् च हरति।

गुरुः—अयि बलवीर ? मन्दिरम् उन्नतम् अवनतम् वा।

वीरः—गुरुवर ! तुङ्गम् मन्दिरम् गगनम् चुम्बति इव।

गुरुः—मन्दिरम् के आयान्ति श्रीश ?

श्रीशः—देव ! मन्दिरम् विहगाः वानरा ब्राह्मणाः च आयान्ति।

गुरुः—साधु। किमाचरन्ति तत्र ते ?

श्रीशः—देव ! तत्र विहंगमाः तिष्ठन्ति, ब्राह्मणाः देवदेवम् शिवम् पूजयंति। वानराः च मन्दिरम् आरोहन्ति।

गुरुः—तत्र अन्ये के सन्ति किम् च आचरन्ति कृष्ण !

कृष्णः—अन्ये केचन ग्रामीणाः सन्ति ये सूर्यम् पश्यन्ति जलम् सिञ्चन्ति, पुष्पाणि फलानि च क्षिपन्ति।

गुरुः—अपरं किमस्ति रे धनपाल !

धन०—अनेकानि सन्ति आसनानि तत्र केचन ब्राह्मणाः जपन्ति। केचन मौनम् सन्ध्यायन्ति। तत्र मर्कटाः फलानि खादन्ति, पुष्पाणि च त्रोटयन्ति।

गुरुः—गगनम् कः प्रकाशयति रे महावीर!

महावीरः—गगनम् विभाकरः प्रकाशयति!

गुरुः—के फलानि खादन्ति रे योगीश्वर!

योगी०—फलानि ते ग्रामीणाः बालकाः खादन्ति गुरुदेव!

अभ्यासः

(क) वाक्य पूर्ति करोः—

चित्तम्——हरति। विप्राः— नमन्ति। अहम्— मन्दिरम्। मन्दिरम्— चुम्बति। पश्यसि— त्वम्। पश्यथ — सूर्यम्। — गगनम्—। वृक्षम् — त्वम्।

(ख) संस्कृत में अनुवाद करोः—

तुम सब ऊंचे मन्दिर में जाते हो। मधुर फल चित्त को हरते हैं। अंगरेज गिरिजा घरों (गिरिजागृह) को जाते हैं। और मुसलमान मस्जिदों (मजित) को। यह हम प्रतिदिन देखते हैं। मृग वन को जाते हैं। ग्रामीण ईश्वर को नहीं पूजते। पर हम तो सदा ईश्वर को पूजते हैं। तुम दोनों किस का ध्यान कर रहे हो। वे सब महेश का ध्यान करते हैं।

(ग) शब्द प्रयोगः—

जलम्, प्रकाशयति, गगनम्, कीदृशम्, पुष्पाणि, एते शब्दाः वाक्ये प्रयोज्याः ।

सप्तमः पाठः

(पाठस्य माध्यम्-अकारान्तपुल्लिङ्गस्य कर्मत्वम् अतीतत्वं च)

आगमः

अध्यापकः—अयि वीरदेव ! रामः क गच्छति ?

वीरदेवः—गुरुदेव ! आरामम् गच्छति रामः ।

अध्यापकः—स तत्र किमाचरति रे भद्रदत्त ?

भद्रदत्तः—स तत्र वृक्षान् पश्यति ग्रन्थान् पठति, पाठान् च रटति ।

अध्यापकः—वानरः कमारोहति वीरसेन ?

वीरसेनः—वानरः वृक्षम् आरोहति ।

अध्यापकः—किम् आम्राणि त्रोटयन्ति वानराः अयि देवदत्त !

देवदत्तः—देव ! न हि, आम्राणि त्रोटयन्ति वानराः अपि तु भक्षयन्ति ।

अध्यापकः—धीरेन्द्र ! आम्रम् मधुरम् अम्लम् वा ।

धीरेन्द्रः—गुरुदेव ! वानरः एव बोधति; हरितम् आम्रम् अम्लम् पक्वं पीतरक्तञ्च मधुरं भवति ।

अध्यापकः—अयि देवेन्द्र ! तत्र वानरः किमाचरति ?

देवेन्द्रः—तत्र वानरः वृक्षम् चालयति, पत्राणि च त्रोटयति, चञ्चलः च इतस्ततः चलति धावति कूर्दति च ।

अध्यापकः—कीदृशं वानरं पश्यति सुरेन्द्रः ?

कश्चित्—धूसरं वानरं सुरेन्द्रः पश्यति, कदाचित् स्थूलम् वानरेन्द्रम् पश्यति, कदाचित् कृशं धूर्तञ्च।

अध्यापकः—धूर्तः वानरः किमाचरति।

कश्चित्—धूर्तो वानरः कलहमाचरति। प्रायशः कोलाहलपरो भवति। जनान् घूर्णयति, प्रतारयति च कदाचित् बालकान्, प्रहरति, भोजनं च आहरति, वस्त्राणि च अपहरति।

अभ्यासः

(क) वाक्य पूर्ति करोः—

देवेन्द्रः — ताडयति। वानराः — प्रतारयन्ति। बालाः मधुराणि — खादन्ति। आम्रवृक्षाः — भवन्ति। — शोभनमाचरति। रामः — गच्छति।

(ख) अनुवाद करोः—

वह कहां जाता है। मैं उसको जानता हूँ। तू दूध पीता है। वे पाठ याद करते है। बालक कूदते हैं। बन्दर बड़े चञ्चल होते हैं। वे मनुष्य बाग को जाते हैं। ऊंचे आम को देख। मोटा भोलू वृक्ष को हिलाता है।

(ग) व्यायामः—

बालाः मृगं पश्यन्ति। बालकः मित्रं कथयति। रामनाथः पाठशालम्

आयाति । चौराः धनम् अपहरन्ति । किङ्करः गृहं प्रविशति । अहम् वस्त्रम् त्यजामि ।

अष्टमः पाठः

(पाठस्य माध्यम्-अकारान्तशब्दानां करणत्वम् अतीतञ्च)

शरीरावयवानि

अध्यापकः—अयि धीरेन्द्र ! रामः कं पश्यति ?

धीरेन्द्रः—गुरुदेव ! रामः आरामं पश्यति ।

अध्यापकः—अयि सोमदेव ! रामः केन कं पश्यति ?

सोमदेवः—श्रीमन् ? नयनेन आरामम् पश्यति रामः ।

अध्यापकः—अयि सत्यवीर ! किमु सत्यं कथयति सोमदेवः ?

सत्यवीरः—न रामः एकेन नयनेन पश्यति, किन्तु नयनद्वयेन पश्यति । न हि रामः नयनेन काणः ।

अध्यापकः—साधु रे सत्यवीर ! साधु सम्यक् बोधसि, अस्तु रे वीरदेव ! बालः केन आहरति ग्रन्थम् ?

वीरदेवः—गुरुदेव ! हस्तेन आहरति ग्रन्थम् बालः ।

अध्यापकः—वामहस्तेन दक्षिणेन वा ?

वीरः—दक्षिणेन एव, यतो हि सः वामेन लुञ्जः ।

अध्यापकः—अयि कृष्ण ! ग्रामं केन गच्छति पथिकः ?

कृष्णः—देव ! पादेन गच्छति ग्रामं पथिकः ।

अध्यापकः—किमु सत्यं भो सत्यवीर ! पादेन गच्छति नगरं पथिकः।

सत्यवीरः—ओम् ! श्रीमन् ! एकेनैव पादेन ग्रामं याति पथिकः। यतो हि पादेन खञ्जः स वराकः।

अध्यापकः—कष्टम् ! कष्टम् अनुभवति स वराकः अतएव शनैः २ गच्छति। कीदृशः सः म्लेच्छः रे धुरेन्द्र !

धुरेन्दः—सः म्लेच्छः कर्णद्वयेन बधिरः, उत्तमाङ्गेन च खल्वाटः, तथा पृष्ठेन कुब्जः, वर्णेन गौरः, शरीरेण च स्थूलः, हन्त ! वदनेन च मूकः।

अभ्यासः

(क) वाक्य पूर्तिः—

— नयनद्वयेन — पश्यति। बालः — फलानि आहरति। सत्यदेवः दक्षिणेन — लुब्जः। म्लेच्छः —— बधिरः। न एकेन — गच्छति रामः — पादद्वयेन। योगेन्द्रः — वीरेन्द्रम् ताडयति।

(ख) संस्कृत बनाओः—

वह रथ के द्वारा गांव को जाता है। रवीन्द्र कान से सुनता है। खड्ग से सज्जन पर प्रहार करता है। पत्र के द्वारा कुशल पहुंचाता है (प्रेषयति)। लोभ से सदा हानि होती है। मद से मनुष्य नष्ट हो जाता है। धन से सब कार्य बन जाते (सिध्यन्ति) हैं। तेल से प्रकाश होता है।

(ग) व्यायामः—

एकः छात्रः भवनमारोहति, अन्ये तं विविधान् प्रश्नान् पृच्छन्ति ।

नवमः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अकारान्तानां सम्प्रदानत्वम्, अतीतञ्च)

व्यायामः

अध्यापकः—अयि कृष्ण ! रामः किमर्थम् आरामम् गच्छति ।

कृष्णः—रामः भ्रमणाय दन्तधावनाय फलेभ्यश्च आरामम् गच्छति ।

अध्यापकः—कः लाभः आरामभ्रमणेन ?

देवदत्तः—आरामभ्रमणेन स्वास्थ्यं समीचीनम् भवति, मुखवर्णम् च मनोहरम् भवति, वक्षःस्थलम् विशालम्, शरीरम् च पुष्टम् ।

अध्यापकः—किमु भ्रमणेनैव शरीरम् पुष्टं भवति ?

वीरेन्द्रः—न हि गुरुवर ! शरीरबलाय व्यायामोऽपि आवश्यकः ।

अध्यापकः—किमु व्यायामेनैव शरीरम् पुष्टं भवति ।

देवेन्द्रः—यः प्रतिदिनम् व्यायाममाचरति तस्मै दुग्धम् घृतम् नवनीतम् चावश्यकम् । घृतम् बलाय, दुग्धम् रक्ताय नवनीतम् च सौन्दर्याय आवश्यकम् ।

अध्यापकः—घृताय दुग्धाय नवनीताय च किमावश्यकम् ।

मोहनः—पुरा तु धेनुधनम् घृताय दुग्धाय नवनीताय चावश्यकम्

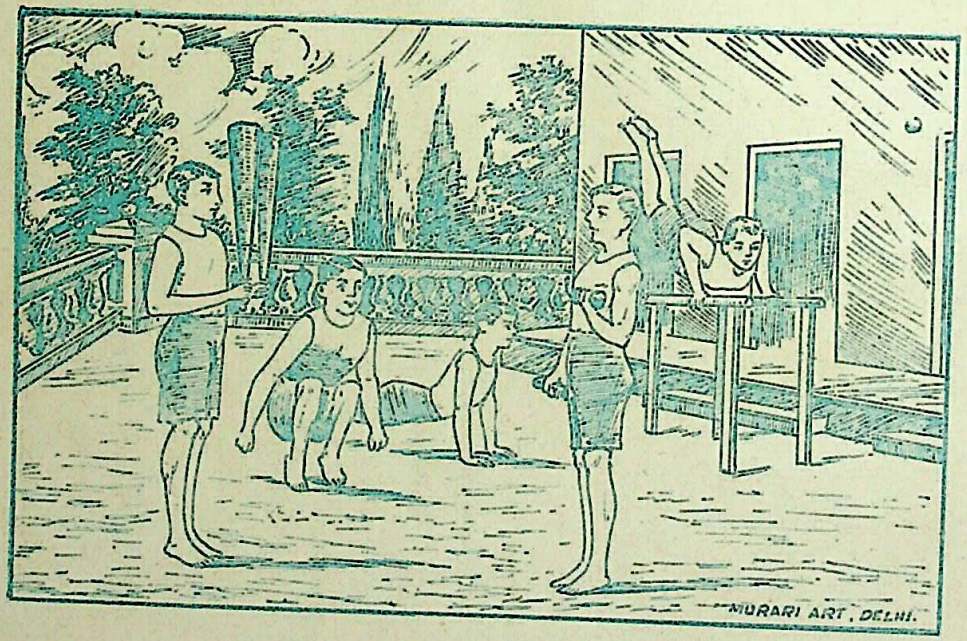
MURARI ART, DELHI.

भवति स्म । परम् अद्यत्वे तु रूप्यकधनमेव सर्वेभ्यः कार्येभ्यः आवश्यकम् ।

अध्यापकः—साधु रे वत्स साधु ! अयि तात ! अपि अद्यत्वे जनकाः पुत्रेभ्यः घृतम् दुग्धम् नवनीतम् वा यच्छन्ति ?

श्रीकृष्णः—गुरुदेव ! अद्यत्वे जनकाः निर्धनाः खलु भवन्ति । धनेन विना पुत्रेभ्यः घृतादिकम् न यच्छन्ति ।

अध्यापकः—घृताय दुग्धाय नवनीताय तर्हि किमाचरन्ति बुधाः ।

देवव्रतः—घृताय बालाः सम्यक्पठन्ति । पठिताः बुधाः भवन्ति, बुधाः च धनमर्जयन्ति ।

अध्यापकः—कस्मै अङ्गाय कः व्यायामः लाभकरः ।

वीरेन्द्रः—दण्डाः भुजदण्डाय, मुद्गरचालनम् कराय, धावनम् वक्षःस्थलाय, आसनानि च रक्तसञ्चाराय लाभकराणि ।

अभ्यासः

(क) वाक्य पूर्ति करोः—

रामः फलाय — गच्छति । सत्यदेवः पठनाय — याति । व्यायामः— आवश्यकः । घृतं — भवति, नवनीतम् — । धनम् — अर्जयन्ति ।

१. संस्कृत बनाओः—

कल्याण के लिये ईश्वर को याद करता हूँ । मैं छात्र के लिये घी देता हूँ । सब के लिये अन्न आवश्यक है । मनुष्य सुख के लिये सब

कुछ करता है। राम कृष्ण के लिये पुस्तक देता है। बालक सौन्दर्य के लिये मक्खन खाते हैं। पिता बल के लिये पुत्र का घी देते हैं।

२. व्यायामः—

रामः भ्रमणाय आरामम् याति, भ्रमण विषयकान् प्रश्नान् तम् पृच्छन्ति।

दशमः पाठः

(पाठस्यमाध्यम्—अकारान्तानाम् अपादानत्वमतीतञ्च)

दावानलः

अध्यापकः—कीदृशः अयम् पावकः वनात् निर्गच्छति।

वनविहारी—यः पावकः वनात् निर्गच्छति स एव दावानलः।

अध्यापकः—कथमुद्भवति दावानलः ?

विज्ञानेशः—अयम् निदाघः, भास्करः चण्डः, कदाचित् तस्मात्पावकः निर्गच्छति कदाचित् आतपात्, वातः वेगेन वाति, तेन वनजाः वंशाः परस्परम् संघर्षमधिगच्छन्ति। तेन संघर्षणेन पावकः समुद्भवति, स एव दावानलः।

अध्यापकः—अवगच्छसि रे मोहन ! कस्मात् धावन्ति श्वापदाः।

मोहनः—आम् ! श्रीमन् ! दावानलात् भीताः दूरम् धावन्ति श्वापदाः। जीवनाय स्पृहयन्ति सर्वे श्वापदाः।

अध्यापकः—के निर्गच्छन्ति वनात ?

श्यामः—देव ! वनात् सिंहाः मृगाः वृकाः शृगालाः च निर्गच्छन्ति।

अध्यापकः—केभ्यः भीताः जनाः धावन्ति ?

देवेन्द्रः—सिंहात् भीताः वीराः, वृकात् भीताः धीराः, मृगेभ्यः भीताः बालाः, शृगालेभ्यश्च भीताः भीरुकाः धावन्ति।

अध्यापकः—एते श्वापदाः कस्मात् भीताः धावन्ति ?

कुमारः—पावकः प्राणान् हरति, प्राणाः च प्रियाः अतः प्रोणेभ्यः अनलाद् भीताः धावन्ति।

अध्यापकः—छात्राः कस्मात् धावन्ति।

चतुरः—देव ! दुष्टाः छात्राः अध्यापकेभ्यः भीताः धावन्ति। मूर्खाः सम्यक् अध्ययनं न आचरन्ति, अध्यापकः तान् ताडयति, हितकरात् ताडनात् ते धावन्ति। यस्मात् पठन्ति तस्मात् धावन्ति, मूर्खाः ते।

अभ्यासः

(क) खण्डित वाक्यों को पूर्ण करोः—

पावकः — समुन्नयति। ग्रीष्मकाले — चण्डो भवति।

कृष्णः — अश्वात् पतति। नृपः — याति। बालः — भीतः।

श्वापदाः — भीताः — प्रधावन्ति। सर्पः — निर्याति।

रामः — पुस्तकम् नयति।

(ख) संस्कृत में अनुवाद करोः—

तारे (नक्षत्राणि) आकाश से गिरते हैं। संसार सूर्य से प्रकाश

पाता है (अधि+गम्)। बालक आसनों से उठते हैं। (उत्तिष्ठन्ति)। राजा महल से मुसाफिरों को देखता है। छात्र अध्यापक से डरता है। लोग कूप से पानी लाते हैं। (आनयन्ति) वृक्षों से पत्ते गिरते हैं।

(ग) व्यायामः—

अहम् पाठशालात् गृहम् धावामि। स गृहात् निर्गच्छति। अहम् रामदेवात् पुस्तकम् नयामि। त्वम् तस्मात् भयम् अधिगच्छसि। सः वृक्षात् फलम् त्रोटयति, वानरः प्रासादात् कूर्दति।

३. प्रश्नाः—

कः कस्मात् भयम् अधिगच्छति ? दावानलः कथम् उद्भवति। तस्मात् के भयम् अधिगच्छन्ति कथम् च।

एकादशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अकारान्तानां सम्बन्धत्वम् अतीतञ्च)

सम्बन्धः

अध्यापकः—के गच्छन्ति रे धीर ?

धीरः—देव ! जनकः पुत्राश्च गच्छन्ति।

अध्यापकः—केषाम् जनकः अयम् मनुष्यः अयि देव ?

देवः—सहचराणाम् जनकः अयम् मनुष्यः गुरुदेव !

अध्यापकः–कुत्र गच्छन्ति ते सर्वे सतीश !

सतीशः–निजावासम् गच्छन्ति ते सर्वे ?

अध्यापकः–कस्य तत् आवासम् रे वीर ?

वीरः–भगवन् ! पुत्राणाम् जनकस्य च तत् गृहम् ।

अध्यापकः–गृहम् परितः किम् भवति रे सुरेश !

सुरेशः–गृहम् परितः रम्यम् उद्यानम् भवति ।

अध्यापकः–कस्य उद्यानम् तत् रे कृष्ण !

कृष्णः–देव ! रसालानाम् उद्यानम् तत् ।

अध्यापकः–अस्य गृहस्य रक्षकः कः ?

कृष्णः–अस्य रामाभिधस्य बालस्य मातुलः अस्य रक्षकः, सः रामस्य जनकस्य रुद्रदेवस्य श्यालः भवति ।

अध्यापकः–अयि देवेश ! रुद्रदेवस्य अनुजः रामस्य कः भवति ।

देवेशः–रुद्रदेवः रामस्य जनकः, जनकस्य अनुजः पितृव्यः भवति । अतः रुद्रदेवस्य अनुजः रामस्य पितृव्यः ।

अध्यापकः–रामः मातुलस्य कः शूरसेन ?

शूरसेनः–रामः निजस्य मातुलस्य भागिनेयः ।

अध्यापकः–रामस्य मातुलस्य किम् अभिधानम् रे कुमार ?

कुमारः–रामस्य मातुलस्य महाराजः केकयः इति नाम ।

अभ्यासः

(क) वाक्य पूर्ति करोः-

रामश्यामकामाः — पुत्राः । वसुदेवः — पिता । एतत् पुस्तकम् — अस्ति । — मातुलस्य — अभिधानम् । एतत् —गृहम् अस्ति । अयं — पुत्रः भवति ।

(ख) संस्कृत बनाओः—

राम जनक के आदेश से वन में जाता है । पर्वत के शिखर ऊंचे होते हैं । अर्जुनदेव का पिता रामदेव है । ईश्वर सब के कामों को देखता है । राजा के आदमी महल से बन को जाते हैं । हम आचार्य का कहना (आदेश) मानते हैं । मैं संसार के तत्व को जानता हूँ । कूप का जल मधुर है । निर्बल का बल भगवान् है । यह फूलों का हार मनुष्य के हृदय को हर लेता है ।

(ग) शब्द प्रयोगः—

जनकः, मातुलः, श्यामः, अभिधानम्, गच्छन्ति ।

द्वादशः पाठः

(पाठस्यमाध्यम्—अकारान्तानामधिकरणत्वमतीतञ्च)

महानसः

अध्यापकः-गृहस्य कोणे किम् भवति रे धीर !

धीरः-श्रीमन् गृहस्य कोणे महानसः भवति ।

अध्यापकः—महानसे किम् आचरन्ति गृहस्थाः रे वीर !

वीरः—भगवन् महानसे कुटुम्बस्य सदस्याः भोजनम् खादन्ति।

अध्यापकः—भोजने किम् किम् पचति पाचकः रे वीरेन्द्र !

वीरेन्द्रः—देव ! भोजने पाचकः सूपम् ओदनम् शाकम् च पचति।

अध्यापकः—शाके सूपे च सः किम् पातयति।

वीरेन्द्रः—शाके सूपे च पाचकः उपस्कारम् पातयति।

अध्यापकः—उपस्कारेण किम् भवति।

सोमदत्तः—उपस्कारेण भोजनम् रुचिकरम् भवति।

अध्यापकः—उपस्कारे कस्य कस्य गणनम् भवति रे कुमार !

कुमारः—देव ! उपस्कारे कृष्णमरीचिकस्य जीरकस्य, धान्यकस्य, तेजपत्रस्य, लवङ्गस्य, रामठस्य च गणनम् भवति।

अध्यापकः—ओदनम् कथम् खादन्ति गृहस्थाः ?

सत्यदेवः—सूपेन, दुग्धेन, मिष्टेन वा ओदनम् खादन्ति गृहस्थाः।

अध्यापकः—ओदनेन सह पक्वस्य दुग्धस्य किम् नाम ?

वीरेन्द्रः—देव ! ओदनेन सह पक्वम् दुग्धम् पायसम् भवति।

अध्यापकः—अयि कृष्ण किमु पायसम् रुचिकरम् पुष्टिकरम् च भवति ?

कृष्णः—देव ! पायसम् बहुरुचिकरम् बलकरम् च भवति।

अध्यापकः—संयावः कीदृशः भवति इति अवगच्छति कश्चित् ?

बालः—देव ! घृतेन भर्जितम् जलेन सिक्तम् चूर्णं मिष्टेन च मिश्रितम्, मिष्टान्नम् संयावः भवति।

अध्यापकः—संयावः रुचिकरः पायसम् वा रुचिकरम् ?

बालः—उभयम् रुचिकरम्। परम् फलानि बहुलाभकराणि इति मे जनकः कथयति।

अध्यापकः—साधु रे साधु वत्स! तव जनकः सत्यम् कथयति, नवीनाः बलहीनाः अतः तेषाम् फलानि रुचिकराणि। प्राचीनाः सबलाः अतः तेषाम् मिष्टान्नम् रुचिकरम्।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः

मृग सदा घने वन में भोजन के लिये विचरते हैं। हम बचपन से इन्द्रप्रस्थ नगर में रहते हैं सज्जनों के सत्संग से गुण उत्पन्न होते हैं। जलचर स्थल से जल में अधिक प्रसन्न होते हैं। क्या तुम तिलों में तैल और दूध में मक्खन देखते हो। नगर में हिन्दू मुसमानों का उपद्रव हो रहा है। वन में बांसों के संघर्ष से दावानल पैदा होती है। सिंह में अनेक गजों का बल है।

प्रश्नाः—

मिष्टान्ने फले च को भेदः?

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

पावकः — लवणम् पातयति। — भोजनम् — भवति। रामः — खादति। कुमाराः — खेलन्ति। कुमारस्य — अयम् — अस्ति। सूर्योदये — नश्यति। — सूर्यः — गच्छति।

त्रयोदशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्-सर्वेषाम् कारकाणाम् अभ्यासः)

सुदिनम्

मोहनः-अयि मित्र सोहन ! किम् चिन्तयसि ?

सोहनः-न हि किम् अपि केवलम् एतत् एव यत् अद्य सुदिनम् ।

मोहनः-मित्र ! भारते तु सदा सुदिनम् एव ।

सोहनः-मित्र ! विदेशीयः भूपालः । अहहः कथम् अत्र सदा सुदिनम् ।

मोहनः-न अयम् मम अभिप्रायः ।

सोहनः-कः तावत् अभिप्रायः ? किम् तावत् सुदिनम् ।

मोहनः-गौराङ्गदेशः पर्वतीयः, तत्र सदा मेघाः विचरन्ति । भास्करः कदाचित् एव उद्गच्छति । अतः यस्मिन् दिने भास्करः उद्गच्छति, तद् दिनम् सुदिनम् व्यवहरन्ति ।

सोहनः-एवम् चेत्, भवान् सत्यम् कथयति, भारते सदा सुदिनम् । परम् न अयम् भारतीयानाम् विचारः ।

मोहनः-कः तर्हि भारतीयानाम् विचारः ।

सोहनः-अस्मात् विपरीतः । भारते सदा सूर्यः उद्गच्छति अतः यस्मिन् दिने आकाशः मेघाच्छन्नः भवति तदेव दिनम् सुदिनम् ।

मोहनः-अस्तु । अद्य तावत् भारतीयानाम् सुदिनम् तस्य विषये किम् चिन्तयति भवान् ।

सोहनः-कुत्रचित् भ्रमणाय चलामः इति चिन्तयामि ।

मोहनः—अद्य उपवनस्य दृश्यम् बहु रम्यम् । तत्रैव भ्रमणाय चलामः ।

सोहनः—केन यानेन चलामः ।

मोहनः—प्राकृतिकेन यानेन ?

सोहनः—किम् तत् ।

मोहनः—द्वौ पादौ ।

अभ्यासः

(क) निम्न लिखित वाक्यों की संस्कृत बनाओः—

मृग वन में अपने भोजन के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं । रविदत्त का पुत्र कृष्णदत्त भोजन करने के लिये घोड़े द्वारा अपने घर को जाता है । रामचन्द्र देवदत्त के लिये, घर से चाकू (लवित्रम्) लाकर फल काटता है । सज्जनों के सत्संग से इस संसार में निकृष्ट लोग भी श्रेष्ठ हो जाते हैं । सब लोग इस संसार में अपने सुख के लिये वेद शास्त्रों के धर्म का आचरण करते हैं । सत्यदेव अपने घर से पढ़ने के लिये प्रतिदिन पैदल ही नगर की पाठशाला को जाता है । सिंह नगर और ग्राम से दूर घने वन में स्वतन्त्रा से विचरते हैं ।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

— मधुराणि — खादति । बालकाः — आगच्छन्ति ।

प्रातः — स्वास्थ्यकरम् — । — अश्वयाने

— तिष्ठन्ति। — वने — नित्यम् — गच्छामि। — भीतः — धावति। तत्र — स — पुनः अवलोकयति। श्रान्तः — अहम् —।

(ग) प्रश्नाः—

भारते सुदिनम् कदाभवति। गौराङ्गदेशे च कदा। किम् भारतम् पराधीनम्। केषाम् तत् आधीनम् अस्ति। स्वाधीनम् कर्तुम् इच्छथ किम्। इच्छथ चेत् किमर्थम्?

चतुर्दशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्याभ्यासः)

जीवालयः

कृष्णः—अयि अग्रज राम! कुतो भवान्।

रामः—प्रिय कृष्ण! निजगृहादागच्छामि। कुतः च भवान्।

कृष्णः—अद्य पाठशाले अनध्यायः। मनोरञ्जनाय अद्य कुत्र चलामः? अपि भवान् चलति।

रामः—वत्स! नूनम् चलामि। मम विचारे तु जीवालयः दर्शनीयः।

कृष्णः—साधु कथयति भवान्। किम् अत्र लवपुरे अपि जीवालयः।

रामः—अत्र शोभनः जीवालयः, विविधाः जीवाः तत्र वसन्ति।

कृष्णः—कियद् दूरम् तत्?

रामः—दूरम्, योजनस्य विप्रकर्षः।

कृष्णः—अस्तु। तर्हि अश्वयानेन चलामः।

रामः—एष जीवालयः। अहो दर्शनीयः। विशालम् अस्य भवनम् विशालम् च द्वारम्।

कृष्णः—अपि! शुल्कमस्य अवलोकनस्य।

रामः—निश्शुल्कम् अस्य प्रवेशः, प्रत्यहम् प्रभूताः जनाः अत्र आयान्ति मनोरञ्जनाय।

कृष्णः—के के अत्र जीवाः?

रामः—वन्याः दुष्प्राप्याश्च।

कृष्णः—अहो विचित्रः जीवः, किम् नाम अस्य?

रामः—अयम् गवयः, अयम् श्वापदः वृकः।

कृष्णः—किमु अत्र शृगालः अपि वसति।—

रामः—ओम! शृगालः, सिंहः, गजः, मृगः, अन्ये च श्वापदाः वसन्ति?—

कृष्णः—अपि खगाः अपि अत्र वसन्ति?

रामः—विविधाः खगाः अत्र शाद्वलखण्डे वसन्ति।

कृष्णः—न निर्गच्छन्ति स्वस्थानात् खगाः।

रामः—न हि, परितः विशालम् जालम्।

कृष्णः—जलचराः कुत्र वसन्ति?

रामः—विशालः तडागः रचितः। तत्र जलचराः वसन्ति।

कृष्णः—कुतो न निमज्जन्ति जलचराः जले?

रामः—जलम् तेषाम् जीवनम्। यथा खगाः पवनात् न पतन्ति तथा जलचराः जले न निमज्जन्ति।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

कहो सुरेन्द्र! आज इस समय रामचरण कहाँ से आ रहा है। वत्स जगन्नाथ! आज उसके यन्त्रालय में उत्सव के कारण से अवकाश है। उस विद्यालय के छात्र गेंद से बाग में खेल रहे हैं। उन लड़कों में कोई दौड़ता है कोई कूदता है और कोई हंसता है। इस नगर से एक योजन दूर पर जीवालय भी देखने योग्य है। यह मोर सायंकाल ऊंचे आम के पेड़ पर बैठकर बोलता है। उस जीवालय के चारों तरफ लम्बा चौड़ा मैदान है। इस जीवालय में इस द्वार से बिना मूल्य देखने के लिये बहुत से आदमी घुसते हैं। इस जीवालय का पूर्वीय द्वार बड़ा विशाल है। अच्छा, गाँव से जीवालय दखने के लिये घोड़ा गाड़ी से चलें। उस जीवालय में अनेक पक्षी पिञ्जरों में रहते हैं।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

प्रिय सतीश! — आगच्छसि? आम्! — एव — । — बहवः — विहगाः च — । — रक्षकाः जीवेभ्यः — यच्छन्ति। — सिंहाः गर्जन्ति। जलचराः — वसन्ति। — जले — निमज्जन्ति। अहो! — तडागः — । — अस्मिन् — जलम् — ।

(ग) प्रश्नाः—

जीवालयः कीदृशो भवति । के के जीवाः तत्र वसन्ति । विहगाः अपि तत्र सन्ति किम् । जलचराः कस्मिन् भागे वसन्ति । जीवालयस्य का आवश्यकता ।

पञ्चदशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्य अभ्यासः)

सहभोजः

पुत्रः—बुभुक्षितः पाठशालात् आगच्छामि तात ! किञ्चित् भोक्तुम् इच्छामि ।

जनकः—तात ! श्रुतिकान्त ! किम् साधारणेन भोजनेन, अद्य सहभोजाय गमनीयम् ।

पुत्रः—कीदृशः सः सहभोजः तात !

जनकः—अपि स्मरसि ? भागिनेयम् रमेशचन्द्रम् ।

पुत्रः—कथम् विस्मरामि ? सः खलु मम वयस्यः ।

जनकः—तस्य अग्रजस्य विवाहोत्सवः । अतः एव अद्य निमन्त्रणम् ।

पुत्रः—अपि अभिनवानि वसनानि परिधाय चलामि ?

जनकः—आम् पुत्रक ! नूतनानि एव वसनानि धारणीयानि ।

पुत्रः—नूतनानि वस्त्राणि मह्यम् रोचन्ते । तानि परिधाय चित्तम् प्रसीदति ।

जनकः—अयि वत्स ! किमु वसनानि एव तुभ्यम् रोचन्ते न पुनः मिष्टान्नम् ?

पुत्रः—मिष्टान्नम् बहु रोचते। मिष्टान्नस्य लोभः सहभोजाय त्वरयति माम्।

जनकः—अपि अवगच्छसि पुत्रक ! सहभोजे किम् किम् भवति।

पुत्रः—बहुविधम् मिष्टान्नम्, नानाविधा च शाकाः।

जनकः—सहभोजस्य शाकाः अपि ते रुचिकराः ?

पुत्रः—न हि तात ! यतो हि तेषु बहु मरीचकम् अम्लम् च पातयन्ति येन शाकाः तिक्ताः भवन्ति।

जनकः—आपि बोधसि ? यदा जनाः जेमन्ति तदा मिष्टान्नम् कः परिवेषयति।

पुत्रः—मिष्टान्नम् ज्येष्ठाः पूज्याः वृद्धाः परिवेषयन्ति शाकान् तु युवकाः।

जनकः—बालाः किम् परिवेषयन्ति ?

पुत्रः—बालाः सलिलम्। शरावान् पत्रालिम् च।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओ :—

सीताराम का भाई रमेशचन्द्र बहुत दिनों से मेरा मित्र है। इस मास को दशमे दिन में उसका विवाह कमला के साथ होगा। मैं पुराने कपड़े छोड़कर नये पहन उसके विवाह में चलता हूँ। क्या वहाँ उत्सव के रूप में सहभोज भी है। विविध मिठाइयां खाकर मेरा चित्त

बड़ा प्रसन्न होता है। अच्छा तुम बतलाओ! तुम्हें नये कपड़े अच्छे लगते हैं या मिठाइयाँ। मान्य! मैं मिठाई के लोभ से तुम्हारे साथ नहीं चल रहा हूँ। किन्तु सहभोज में क्या २ होता है यह जानने के लिये आपके साथ चलता हूँ। वत्स! सहभोज में तो बहुत सी मिठाइयाँ तथा अनेक शाक रुचिकर बनते हैं।

(ख) वाक्य पूर्ति करो:—

बुभुक्षितः — विद्यालयात् — । —पुत्र! — किम् किम् — भवति। — नूतनानि — धारणीयानि। मलिनानि — मह्यम् — रोचन्ते। — मम भागिनेयः — । — शरावान् — । वृद्धाः — परिवेषयन्ति।

(ग) प्रश्नाः—

सहभोजस्य कोऽर्थः। सः कदा भवति? सहभोजे किम् किम् भवति। यूयम् इच्छथ किम् सहभोजे भोक्तुम्। ओ३म् चेत्? तदा कथम्-नो चेत् तर्हि कथम् न।

(घ) शब्द प्रयोगः—

बुभुक्षितः, गमनीयम्, निमन्त्रणेन, रोचन्ते। तिक्तानि, परिवेषयन्ति, शरावान्, पत्राणि।

षोडशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्य अभ्यासः)

पाठशालम्

माता—अपि स्नातः रे वत्स?

वत्सः—शीतकाले अपि शीतलेन सलिलेन स्नातः।

माता—साधु ! रे वत्स साधु ! ईदृशाः एव सद्बालकाः यथासमयम् सर्वम् कार्यम् सम्पादयन्ति ।

वत्सः—समयस्य महत्वम् अहम् अवगच्छामि, समये स्नातः यथा-समयम् पाठशालम् गच्छामि ।

माता—वत्स ! कुशलः ते अध्यापकः धार्मिकश्च । कः अध्यापकः समयपरिपालनम् उपदिशति ?

वत्सः—मम आचार्यः ।

माता—अहो सुशीलः ते आचार्यः । किम् अध्यापयति ते आचार्यः ।

वत्सः—विविधान् विषयान् अध्यापयति ।

माता—कान् अध्यापयन्ति ते आचार्यचरणाः ।

वत्सः—ज्येष्ठान् श्रेष्ठान् च अध्यापयन्ति ।

माता—अपि कदाचित् ताडयति ते आचार्यः ।

वत्सः—सापराधान् दुष्टान् च ताडयति ।

माता—कदाचित् द्रव्यम् अपि दण्डयति ।

वत्सः—प्रायशः द्रव्यम् एव दण्डयति ।

माता—दैहिकम् कदाचित् एव दण्डयति । अतएव छात्राः तस्मिन् स्निह्यन्ति ।

माता—कदाचित् प्रणमथ अपि आचार्यान् ।

वत्सः—प्रतिदिनम् आचार्यान् नमामः सर्वान् च अध्यापकान् ।

माता—कीदृशम् भवनम् पाठशालस्य ।

वत्सः—रम्यम् विशालम् मनोहरञ्च ।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

श्यामदेव शंतकाल में भी कूप के जल से नहाता है। और उचित समय पर सब छात्रों के साथ पुस्तकें लेकर विद्यालय में उपस्थित हो जाता है। रामचरण प्रति दिन पढ़ाये हुए पाठ को सब से पहले याद कर लेता है। पहले वर्ष सब छात्रों में रामदीन अध्यापकों का कृपापात्र था। उस विद्यालय के सब अध्यापक परिश्रम से छात्रों को पढ़ाते हैं। जो बालक समय पर विद्यालय में उपस्थित नहीं होते उनको अध्यापक दण्ड देते हैं। हमारा विद्यालय उनके घर से एक मील दूर है। प्रातः काल सब छात्र घर से आकर इस मैदान (समतल) में गेंद से खेलते हैं।

(ख) वाक्य पूर्तिः—

ते — सुशीलाः — । — एव छात्राः — पठन्ति । — छात्राः — सन्तापकराः — । — वेदान् — । — वाक्यानि — हितकराणि — । विद्यालये — छात्राः — ।

(ग) शब्द प्रयोगः—

जलेन । स्थाऽसयम् । उपदिशति । अचगच्छामि । सापराधम् । प्रायशः । कदाचित् । रम्यम् । प्रतिदिनम् ।

(घ) प्रश्नाः—

किमर्थम् भवति विद्यालयः ? तत्र कस्मिन् समये गच्छथ ? के के पाठयन्ति तत्र युष्मान् ? कीदृशान् छात्रान् दण्डयन्ति ते ।

सप्तदशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्–भूतकालिकाः क्रियाः)

आपणः

अग्रजः–तात क्षेमचन्द्र ! अध्यापकः ते गन्धयति न पाठशालाम् यथा समयम् अगच्छः इति ।

अनुजः–(लज्जितो भूत्वा) सत्यम् कथयन्ति अध्यापक–महोदयाः ।

अग्रजः–(सरोषम्) तर्हि कुत्र अगच्छः ?

अनुजः–आपणम् अगच्छम् ।

अग्रजः–किम् अर्थम् तत्र अगच्छः ।

अनुजः–भ्रमणार्थम् ।

अग्रजः–त्वमेकलः अगच्छः कश्चित् अन्यः अपि वा ।

अनुजः–तात ! महेन्द्रेण साकम् अगच्छम् । महेन्द्रः माम् प्रातारयत् ।

अग्रजः–निष्प्रयोजनम् न कदाचिद् गन्तव्यम् । अध्ययनस्य नाशः अध्यापकस्य च रोषः भवति । न च एवम् चित्तस्य तोषः ।

अनुजः–हितम् उपदिशति भवान्—पूर्वम् अपि उपादिशत् । अहम् न अपालयम्, अधुना क्षन्तव्यः । अग्रे सदैव परिपालयामि तातवचनम् ।

अग्रजः–सत्यवचनः तातः अतः न दण्डयामि आदेशः सदा स्मरणीयः ।

अनुजः–यथा आदिशति अग्रजः ।

अग्रजः–किम् किम् अभक्षयः आपणे ।

अनुजः-(सहर्षम्) तातस्य आदेशम् अपालयम् । किमपि न अभक्षयम् ।

अग्रजः-(सस्मितम्) पणकाः अभवन् तव अन्तिके ।

अनुजः-पणकाः तु न अभवन् ममान्तिके । महेन्द्रस्य अन्तिके अभवन् । स स्वयमेव अयच्छत् । परम् अहम् न आहरम् ।

अग्रजः—ततस्ततः ।

अनुजः—स स्वयमेव भक्ष्यम् आनयत्, मह्यम् च उपाहरत् । परम् अहम् न आहरम् ।

अग्रजः-साधु वत्स साधु ! धन्यः त्वम् । उपस्थितम् अपि रुचिकरम् पदार्थम् अत्यजः । ततः ।

अनुजः-यदा अहम् न अभक्षयम् तदा महेन्द्रः अपि न अभक्षयत् । सर्वम् निजानुजाय अयच्छत् ।

अग्रजः-महेन्द्रः अपि सज्जनः । अस्तु । आपणे किम् अपश्यः ?

अनुजः-क्रये विक्रये च तत्परान् गृहस्थान् अपश्याम ।

अग्रजः-कस्मिन् आपणे अगच्छत ।

अनुजः-घण्टागृहे चन्द्रिकाचतुष्पथे अजातंन राजमार्गे, यममञ्जिते अन्येषु च समीपस्थलेषु अगच्छाम ।

अग्रजः-अस्तु-भोजनान्तरे सर्वम् वृत्तान्तम् पृच्छामिः अधुना विलम्बः भवति ।

अभ्यासः

१. संस्कृत बनाओः—

कल तुम रामदीन के साथ कहाँ गये थे। अधिक लोग दुकानों में जाकर पैसों से मिठाई लेकर खाते थे। लवपुर के दुर्ग में बड़े २ भवन थे। परशुराम ने जनक के आदेश से अपनी जननी को मार दिया था। कृष्णनगर से दक्षिण में इन्द्रप्रस्थ एक मील की दूरी पर है। अधिक भ्रमण से अध्ययन में विघ्न हो जाते हैं। श्रीराम दण्ड के द्वारा दुष्ट मनुष्य को पीटता था। बसन्त काल में वृक्षों से पत्ते गिरते हैं। स्वास्थ्य के लिये व्यायाम करना आवश्यक है।

(क) वाक्य पूर्ति करोः—

प्रसीदति — । — किमपि — अभक्ष्यम्। मम — पुस्तकानि — । उपस्थितम् — मधुरम् — अत्यजः। अस्ति — सस्वभावः। आपणे — मानवान् — । घण्टागृहस्यसमीपे — राजमार्गे — ।

(ग) प्रश्नाः—

कीदृशैः छात्रैः तुष्यति अध्यापकः? निष्प्रयोजनम् कथम् न गन्तव्यम्? दुःशीलानाम् छात्राणाम् अध्यापकः किम् करोति। घण्टागृहसमीपे चन्द्रिकाचतुष्पथाः दृष्टो न वा युष्माभिः।

(घ) शब्दप्रयोगः—

एकजः, तोषेण, स्मरणीयः, पणकाः। अनुजाय। क्षन्तव्यः।

अष्टादशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्य अभ्यासः)

चन्द्रिकाचतुष्पथः

अहो रम्यः इन्द्रप्रस्थीयः चन्द्रिकाचतुष्पथः। परितः रम्याणि हर्म्याणि। उभयोः पार्श्वयोः रम्याणि विशालानिच आपणभवनानि। तेषाम् अग्रतः पदातिपथः। मध्ये विततः राजमार्गः। यत्र धावन्ति विविधानि यानानि। अश्वरथस्य, आशुरथस्य, विद्युद्रथस्य च तारतम्यम् अवलोकनीयम् एव।

कस्मिन् चित् आपणे कौशेयानि वसनानि। कस्मिन् चित् तूलतन्तुमयानि। कस्मिन् चित् मनोहराणि स्वर्णाभरणानि। कस्मिन् चित् रजतमयानि। कस्मिन् चित् पित्तलमयानि पात्राणि, कस्मिन् चित् सुधालिप्तानि मृदावासीयानि। कस्मिन् चित् स्वदेशीयानि शिरस्कानि, कस्मिन् चित् विदेशीयानि। कस्मिन् चित् वल्लीस्फीतपल्लवानि स्वर्णतन्तुरचितानि। कस्मिन् चित् वङ्गीयानि मिष्टान्नानि, कस्मिन् चित् मुम्बापुरीयाणि।

कञ्चिदापणम् गान्धिकाः अधितिष्ठन्ति। कञ्चिद् प्राड्विवाकाः। कञ्चिद् भिषगाचार्याः। कञ्चिद् ज्योतिषाचार्याः।

उपरिलम्बमानाः विद्युत्प्रदीपाः किमपि अवर्णनीयम् रामणीयम् उपस्थापयन्ति। इतस्ततः यातायातरताः ह्रस्वदेहाः मसृणमुखाः इन्द्रपुरीयाः मानवाः कौतूहलम् उपजनयन्ति। प्रदोषे दर्शनीयः अयं चतुष्पथः।

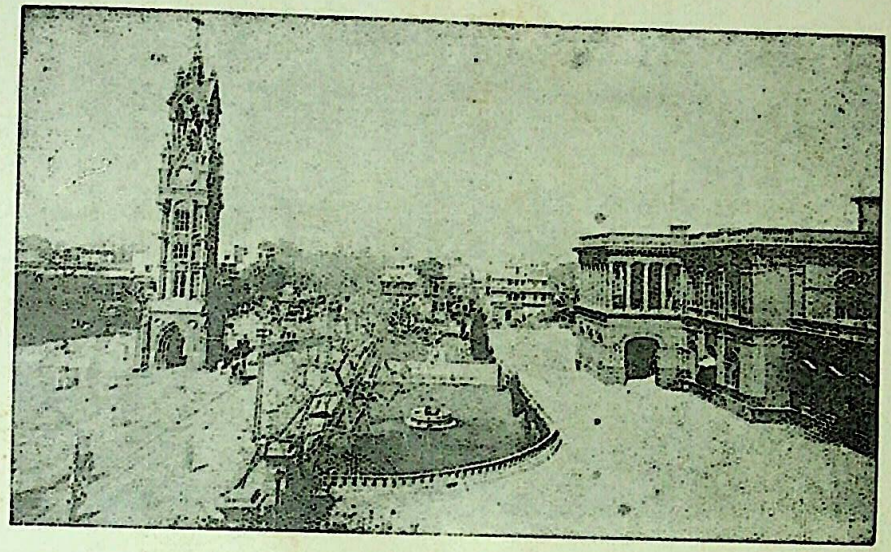

अभ्यासः

(क) संस्कृत वनाओः—

रामनगर के बीच में चांदनी चौक बहुत मनोहर है। उस मार्ग से जनक के साथ मैं वहाँ गया था। वहां मैंने देखा कि राजमार्ग के दोनों तरफ बड़ी २ दुकानें थीं। उन दुकानों से प्रतिदिन एक आदमी पुस्तकें ले जाता था। चांदनी चौक में मनुष्य घोड़ागाड़ियों के द्वारा भ्रमण करते थे। वहाँ पर आदमियों की भीड़ (संमर्दः) राजमार्ग से दूर रहती थी। किसी दुकान में रेशमी कपड़े किसी में सुनहरी जेवर, बिकते थे। आज कल क्या है नहीं जानता।

(ख) वाक्यपूरणम्:—

अहो सुन्दरम् — नगरम्। तत्र — रक्तदुर्गम् — । चन्द्रिका-चतुष्पथे — रामणीयम् — । — आपणम् — अधितिष्ठन्ति। कश्चित् — प्राडविवाकाः — । — विद्युत्प्रदीपाः — प्रकाशयन्ति ।

(ग) प्रश्नाः—

किम् पश्यथ यूयम् चन्द्रिकाचतुष्पथे ?

तत्र किम् २ अवलोकनीयम् ?

राजमार्गे के २ चलन्ति ?

(घ) शब्द प्रयोगः—

हर्म्ये, विततेन, आशुरथस्य, तारतम्येन, शिरस्काय, मसृणमुखः, ।

एकोनविंशः पाठः

सभाभवनम्

प्रथमः पारिवेशिकः—अपि अपश्यः सभाभवनम् ?

अपरः—किमु अत्रापि नगरे विशालम् सभाभवनम् ?

प्रथमः—ओम्, विशालम् सभाभवनम् ।

अपरः—अप्रख्याते नगरे विशालम् सभाभवनम् आश्चर्यमेतत् ।

प्रथमः—किम् अत्र आश्चर्यम्, व्यापारस्य अल्पत्वेन नगरम् अप्रसिद्धम्, जनाः सभ्याः अतः विशालम् सभाभवनम् ।

अपरः—ह्यः किम् अभवत् सभाभवने ?

प्रथमः—राष्ट्राधिनायकस्य भाषणम् अभवत् ।

अपरः—किमु राष्ट्राधिनायकस्य ?

प्रथमः—आम् राष्ट्राधिनायकस्य ।

अपरः—हन्त अहम् न अवागच्छम् ?

प्रथकः—यदि अवागच्छः तर्हि किम् आचरः ?

अपरः—यथासमयम् सभाभवनम् अगच्छम् राष्ट्राधिनायकस्य दर्शनेन अपावयम् निजजीवनम् ।

प्रथमः—किमु दर्शनेनैव जीवनम् पावितम् अभवत् उत तेषामादेशपालनेन ?

अपरः—दर्शनेन आदेशस्य परिपालनाय चित्ते उत्साहः उदेति ।

प्रथमः—सत्यमेतत् परम् गतम् न शोचनीयम्, अधुना तेषाम् आदेशः पालनीयः।

अपरः—कः आदेशः महामान्यानाम् ?

प्रथमः—प्राणैः अपि राष्ट्रम् रक्षणीयम्।

अपरः—नूनम् परिपालयामि आदेशम्। परम् भाषणम् कीदृशम् अभवत् ?

प्रथमः—वीररसेन परिपूर्णम्। परिमार्जितैः च विचारैः संयुतम्।

अपरः—जनसंमर्दः कीदृशः अभवत् ?

प्रथमः—अत्यन्तः जनसम्मर्दः, स्थानस्याभावात् जनाः भवनात् बहिः अतिष्ठन्।

अपरः—रङ्गमञ्चोपरि के उपाविशन् ?

प्रथमः—प्रसिद्धाः नागरिकाः।

अपरः—व्यासपीठे के के उपातिष्ठन्।

प्रथमः—सचिवः, प्रधानः, प्रसिद्धाः सभ्याः, अन्ये च देशनायकाः उपातिष्ठन्

अपरः—अवसरः निरगच्छत्। अस्तु। अग्रे सावधानः।

अभ्यासः

(१) संस्कृत बनाओः—

क्या तुम अपने गांव के सभाभवन को देखते हो ? रामनगर से आज ही एक आदमी सभाभवन में आया है। राज भवनों के नायकों के दर्शन से मैं अपने जीवन को पवित्र करता था। उपदेशकों के लिये धनिक लोग

बहुत सा द्रव्य देते हैं। उनके दर्शन से आदेश के पालन के लिये चित्त में उत्साह पैदा होता है। सभाभवन में कल किस उपदेशक का व्याख्यान हुआ था। राष्ट्रपति राष्ट्र के लिये अपना जीवन तक दे देते हैं। राष्ट्र भी सब प्रकार से उनकी सेवा करता है। वीर रस से परिपूर्ण उपदेश से मनुष्यों का हृदय उत्साहित हो जाता है।

(२) वाक्य पूरणम्—

ह्यः — भाषणम् — । हन्त ! — न — अगच्छः । परम् — न — । — तेषाम् — पालनीयः । प्राणैः — राष्ट्रम् — इति — आदेशः । सभाभवने — कीदृशः — । व्यासपीठे — के — उपतिष्ठन् ?

(३) प्रश्नाः—

कस्मिन् दिने यूयम् सभाभवनम् गच्छथ ? तत्र किम् भवति ? तत्र गमनेन जनानाम् कः लाभः भवति ? अपि युष्माकम् लाभः सञ्जातः ?

(४) शब्द प्रयोगः—

अप्रख्यातस्य, व्यापारात्, राष्ट्राधिनायकम्, जनसम्मर्दाय, रङ्गमञ्चे, नागरिकेभ्यः, सचिवः।

विंशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्-भविष्यत्कालिकाः क्रियाः)

चित्रपटः

धर्मपालः—अभिनवानि वसनानि परिधाय, काकपक्षान् च प्रसाध्य अद्य कुत्र गमिष्यसि रे रसिकेन्द्र ?

रसिकेन्द्रः—मनोहरम् चित्रम् आगतम्, अपूर्वमिति कथयन्ति दर्शकाः, तत् अवलोकयितुम् यास्यामि।

धर्मपालः—किमु कस्मिन् चित् आपणे ?

रसिकेन्द्रः—नहि, नाट्यशाले।

धर्मपालः—आम् ! चित्रमयम् नाट्यमवलोकयितुम् गमि ष्य भवान्।

रसिकेन्द्रः—न केवलम् चित्रमयम् अपितु वाङ्मयमपि।

धर्मपालः—ननु कथम् चित्रम् वदति ?

रसिकेन्द्रः—न केवलम् वदति चलति अपि।

धर्मपालः—अहो जडम् अपि चित्रम् चलति वदति च।

रसिकेन्द्रः—अथ किम्।

धर्मपालः—किमु चेतनम् चित्रम् येन चलति वदति अपि।

रसिकेन्द्रः—वैज्ञानिकानाम् किम् असाध्यम्।

धर्मपालः—अहो विचित्रम् विज्ञानमेषाम्। भो ! नाट्यस्य उपाख्यानम् किम्।

रसिकेन्द्रः—स्नेहमयम्।

धर्मपालः—अपि स्नेहमयम् नाट्यम् अवलोकयिष्यति।

रसिकेन्द्रः—स्नेहे एव संसारस्य आनन्दः।

धर्मपालः—विद्योपार्जनकाले स्नेहस्य नाम अपि न ग्राह्यम्।

रसिकेन्द्रः—किमु पिता न स्निह्यति।

धर्मपालः—किमु तादृशमेव वात्सल्यम् चित्रेषु। बाल्ये स्नेहस्य अनुभवः घातकः।

रसिकेन्द्रः—विदेशे सर्वे एव चित्राणि अवलोकयन्ति।

धर्मपालः—नूनम् विदेशे छात्राः चित्राणि अवलोकयन्ति, परम् अध्ययनाय न तु घातकस्य स्नेहस्य वर्धनाय। परतन्त्रे भारते खलु स्नेहमयस्य चित्रस्य अवलोकनम् आचारस्य विनाशाय एव।

रसिकेन्द्रः—सत्यम् कथयसि परम् चलं हि चित्तम् तत्र गच्छति।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

रवीन्द्र! आज मैं नवीन वस्त्र पहिन कर सुरेन्द्र के साथ गाँव से इन्द्रप्रस्थ जाऊँगा। इन्द्रप्रस्थ से रमेश के लिये सुनहरी आभूषण लाऊँगा। ओमप्रकाश दुकान पर बालकों के मनोरञ्जन के लिये आभूषण लायेगा। रामनाथ के घर से थोड़ी दूर पर चित्रमय नाटक विशाल भवन के अन्दर होता है। उस नाटक में चित्र बोलते हैं नाचते हैं और गाते हैं। छात्रों के लिये सिनेमा देखना हानिकारक है। उस मैदान में काले घोड़े से रामदेव गिर पड़ा। गिरने से उसके शरीर में व्रण होगये थे। तू व्रणों के लिये औषधालय से दवाई लायगा।

(ख) वाक्य पूरणम्—

तत् — मनोहरम् — कथयति देवेन्द्रः। — वसनानि — गच्छसि — ?। वैज्ञानिकानाम् — असाध्यम् —।

स्नेहे — संसारस्य — भवति । विदेशे — चित्राणि — । पराधीने — चित्रस्य दर्शनम् — हानिकरम् ।

(ग) प्रश्नाः—

किम् अवलोकयथ यूयम् चित्रपटम्? तस्य दर्शनम् मूल्येन भवति, अथवा निश्शुल्कम् ? । मूल्येन चेत् तदा भवताम् कः लाभः ? किम् छात्राणाम् चित्रपटस्य अवलोकनम् लाभकरम् ?

(घ) शब्द प्रयोगः—

काकपक्षः, दर्शकैः, चित्रमये, वैज्ञानिकेभ्यः, उपाख्यानं, नाट्ये, शास्त्रम् ।

एकविंशः पाठः

(पाठ्यमाध्यम्—आकारान्तानाम् स्त्रीवाचिनाम् शब्दानाम् प्रयोगः)

यमुनास्नानम्

लीला—अयि शीले ! कुत्र गमिष्यसि ?

शीला—प्रियेलीले ! यमुनायै गमिष्यामि । अपि त्वम् मया सह चलिष्यसि ?

लीला—प्रिये ! कार्यस्य आधिक्यात् न गन्तुम् समर्था ।

शीला—कार्यं तु सदैव भवति अभवत् भविष्यति च परम् शुभावसरो मुहुर्मुहुः न आगच्छति ।

लीला—कीदृशः शुभावसरः ।

शीला—श्रावणमासस्य सोमवासरः तत्र अपि च अमावस्या ।

लीला—दिनम् तु शुभम् एव ।

शीला—तर्हि चलनीयम् एव ।

लीला—अस्तु ! चलिष्यामि । किमु अस्मिन् वासरे ग्रामीणा अपि जना आयान्ति ?

शीला—आयान्ति चेत् का हानिः ?

लीला—असभ्याः हि ते अश्लीलानि गानानि गायन्ति ।

शीला—किमु गानम् अपि अरुचिकरम् ।

लीला—गानम् न अरुचिकरम् किन्तु अश्लीलगानस्य श्रवणमपि । लज्जास्पदम् ।

शीला—सत्यम् एष दोषः । परम् नगरस्य अवतारम् न गमिष्यामः ।

लीला—अवतारे न स्नास्यसि चेत् जले निमज्ज्यसि ।

शीला—भद्रे ! अवतारे एव स्नास्यामः परम् नगराद् बाह्ये ।

लीला—तत्र कः लाभः ?

शीला—नगराद् बहिः ग्रामीणाः पण्यं न अधिगच्छन्ति अतः तत्र न गच्छन्ति ।

लीला—शान्तम् तत् स्थलम्, उपासनायोग्यम् च, तत्र स्नानाय चलिष्यामः ।

शीला—यमुनायै किमुपहरिष्यसि किम् अपहरिष्यसि च ?

लीला—जनाः किमुपहरन्ति ?

शीला—यमुनायाः जले कुसुमानि विकिरन्ति ।

लीला—मुग्धाः हि ते प्रसन्नतोया यमुना, आवास्थ्यम् श्रान्तिश्च यमुनायै

उपहरणीयम्। तेन सा आरोग्यम् प्रयच्छति। तदेव अप-हरिष्यामि। यमुनायाः दर्शनमपि पुण्यम् किमुत स्नानम्।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

शान्ता कल सोमवार को नहाने के लिये यमुना के घाट पर जायगी। चन्द्रकान्ता के प्रोत्साहन से उसके मन में अपूर्व आनन्द हुआ। सरला अध्ययन की अधिकता से कभी यमुना में नहीं नहाती। मैं यही सोचती हूँ कि शुभ दिन बार २ नहीं आयेंगे इसलिये रोज स्नान करती हूँ। शकुन्तला गङ्गा में स्नान करके आयगी तो विमला के घर प्रयोजन वश जायगी। गांव के मनुष्य जब नहाने आते हैं तो अश्लीलता व मूर्खता से पूर्ण गाने गाते हैं। आजकल संसार शृङ्गार रस से प्रसन्न नहीं होता अतः उनके गानों को कोई सभ्य आदमी नहीं सुनता। विमला गंगा से जो जल लाती है उसे घर में छिड़क देती है। लोग यमुना के स्वच्छ जल में फूल फैंक देते हैं।

(ख) वाक्य पूर्तिः—

— न — चेत् मंक्ष्यामः। — श्रवणम् अपि — । अवतारे — सदा — आचरणीयम्। अधिकाः — यमुनायै — उपहरन्ति अहम् तु यमुनायै — उपहरिष्यामि — च अपहरिष्यामि। नित्यम् — स्नानेन स्वास्थ्यस्य — भवति।

(ग) प्रश्नाः—

ग्रामीणाः कीदृशं गायन्ति । तेषाम् गानम् सभ्याः आकर्णयन्ति न वा । नदीनाम् अवतारेषु स्नानम् आचरणीयम् अन्यत्र वा । निरनगायाः स्नानेन को लाभः भवति ।

(घ) शब्द प्रयोगः—

आधिक्यात् मुहुर्मुहुः, मुग्धाः, उपासना, पथ्यम् ।

द्वाविंशः पाठः

श्लोकाः

मनुजाः पुत्रमिच्छन्ति पुत्राः वाञ्छन्ति गौरवम् ।
गौरवम् ब्रह्मचर्यं च, ब्रह्मचर्यं मनोबलम् ॥१॥
मनुजेन गृहम् सुगृहैः मनुजाः
मनुजैः सुगृहैश्च विभाति पुरम् ॥
विटपेन फलम् सुफलैः विटपः ।
विटपैः सुफलैश्च विभाति वनम् ॥२॥
सेवावृत्तो विचित्रोऽयम् आरोपितः भवार्णवे ।
छाया पुष्पं फलं सर्वं युगपत् लभ्यते सदा ॥३॥
वेदवादरताः विप्राः क्षात्राः रक्षाविचक्षणाः ।
धनदान पराः वैश्याः शूद्राः सेवापरायणाः ॥४॥

यूयं वयम्, वयम् यूयम् इति व्यर्थं वदन्ति ते।
म्लेच्छा यूयम् द्विजा वयम् संभवति संगमः कथम् ॥५॥
मज्जितम् यवनाः यान्ति गौराङ्गाः गिरिजागृहम्।
आर्यवर्याः समाजंहि, मन्दिरं वै सनातनाः ॥६॥

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

सब धनों में उत्तम पुत्रधन है अतः उसकी सब इच्छा करते हैं। वे पुत्र जवान होकर अपना गौरव चाहते हैं जो ब्रह्मचर्य से और मनोबल से प्राप्त होता है। एक मनुष्य के सत्य दान अहिंसा आदि गुणों से उसका सारा कुटुम्ब प्रसिद्ध हो जाता है। सज्जनों के गुणों और गृहों से सारा नगर ही शोभित हो जाता है। वसन्त काल में आम के पेड़ फल व फूलों से झुक जाते हैं। द्राक्षा फलों की लता विचित्र होती हैं। ब्रह्मचर्य के बल से कृष्ण ने कंस को मार दिया था। सज्जनों की सेवा से राजा ऐश्वर्य को प्राप्त करते हैं। ब्राह्मणों को बालक प्रातःकाल गुरुदेव से वेदों को पढ़ते थे। क्षत्रिय लोग शस्त्रों से प्रजा की रक्षा करते थे। पढ़ने की अवस्था में सब छात्र एक समान हैं उनमें कोई भेद नहीं।

(ख) वाक्य पूरणम्ः—

पुत्राः — ब्रह्मचर्यम् — । फलैः — मनुजैः — विभान्ति । सर्वे — विद्यालयम् — यान्ति । वानरः — कूर्दति । तस्य — पुस्तकम् —

अस्ति । गौराङ्गाः — गच्छन्ति । — अश्वयानेन — आयान्ति ।

(ग) प्रश्नाः—

सर्वधर्मेषु कः श्रेष्ठः धर्मः, किम् तत्र श्रेष्ठत्वम् । आर्याणाम् किम् धर्मस्थानम् । तत्र ते किम् आचरन्ति ।

(घ) शब्द प्रयोगः—

आरोपितः, गिरिजागृहम्, मनोबलम्, गौरवम् लेच्छेभ्यः, संगमः ।

त्रयोविंशः पाठः

वाग्घरः (Post Office)

अस्मिन् चित्रे वाग्घरस्य द्वारे पत्रहारः तिष्ठति । सः पत्राणि नगरे वितरणाय नयति । सर्वासु राजकीयासु संस्थासु वाग्घर एव परमाऽपयुक्ता संस्था । अस्य प्रबन्धः अपि अन्याभ्यः उत्तमः । स्वल्पेन एव शुल्केन सर्वविधाः वार्ताः परत्र प्रापयति । वार्ताः सत्वरं प्रहेयाचेत्, ताः सत्वरं प्रापयति । विलम्बेन प्रहेयाचेत् विलम्बेन प्रापयति । केवलं शुल्कस्य भेदः । अनावृतम् पत्रम् प्रहेयम् चेत् अद्यत्वे त्रीणि पणकानि व्ययीभवन्ति । आवृतम् पत्रम् प्रहेयं चेत् चत्वारि पणकानि व्ययीभवन्ति । वाग्घरात् अनुल्लेपः चतुर्भिः पणकैः लभ्यः । स्वकीयः अनुल्लेपः यदि प्रहेयः तर्हि आणकस्य टीकितम् आयोजनीयम् । उभयविधं पत्रम् द्वितीयस्मिन् दिने अधिगच्छति । अवस्थानात्

POST OFFICE
LETTER BOX
13-20

(station) दविष्ठे ग्रामे पत्रम् प्रहेयम् चेत् तर्हि चतुर्भिः दिवसैः गच्छति। 'होराया आभ्यन्तरे एव समाचारः प्रहेयः चेत् तारेण प्रहेयः। तस्य शुल्कमपि स्वल्पमेव दश आणकमात्रम्, दशसु आणकेषु अधिकात् अधिकम् दश शब्दाः लेख्याः। यदि समाचारः दीर्घः शब्दाश्च ह्यधिकाः ततः प्रतिशब्दम् एकम् आणकम् अधिकम् प्रदेयम् भवति।

यदि समाचारः वृत्तान्तरूपः तर्हि शुल्कम् अस्मात् अपि न्यूनम्। वाग्घरः न केवलम् पत्रम् समाचारं वा नयति अपि तु धनम् अपि मणि-आहर (money order) रूपेण पदार्थजातान्च परिशिला (parcel) रूपेण एते अन्ये च नियमाः वाग्घराद् अधिगन्तव्याः।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओ :—

सब राजकीय विभागों में डाक विभाग, ही सच्चा और लाभदायक है। इस विभाग के प्रबन्धक सत्यता से ही व्यवहार करते हैं। डाकघर के द्वारा एक जगह से दूसरी जगह पर समाचार पहुँचा सकते हैं। यदि समाचार जल्दी से पहुँचाना हो तो तार के द्वारा पहुँचा सकते हैं। एक बन्द लिफाफे के भेजने में चार पैसे आज कल खर्च होते हैं। यदि लिफाफा अपना हो तो वह चार पैसे की टिकट लगाने से जा सकता है। समाचार गावों में चौथे दिन और शहरों में दूसरे दिन पहुँचता है। दश शब्द वाले तार के भेजने में दश आने खर्च होते हैं। बड़े २ नगरों में कई

डाकघर होते हैं और किसी २ गांव में एक भी नहीं। प्रयत्न करने पर वहां भी हो सकता है।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

शुल्केन — परत्र —। मम सहोदरः — पत्रहारः — । अनुच्छेपस्य — चतुर्णाम् — टीकितम् — । — वाग्घरेषु — कार्यम् भवति । — समाचारपत्रम् — । — सन्ति — वृत्तान्तानि ।

(ग) शब्द प्रयोगः—

अनुच्छेपः, वाग्घरः, प्रतिशब्दम्, दविष्ठः, अनावृतम् पत्रम्

(घ) प्रश्नाः—

वाग्घरस्य कामवति व्यवस्था, को वितरति नगरेषु पत्राणि । के लाभा भवन्ति वाग्घरेण जनानाम् ।

चतुर्विंशः पाठः

चिकित्सालयः

नगरस्य चिकित्सालयः बहुविशालः । अस्मिन् चिकित्सालये शतानि विशालानि भवनानि । तत्र एकः प्रधानः चिकित्सकः तिष्ठति तस्य चत्वारः चिकित्सकाः सहायकाः । अष्टौ उपवैद्याः औषधम्

वितरन्ति। एकस्मिन् पक्षे औषधस्य मूल्यम् आहरन्ति। अन्यस्मिन् पक्षे निश्शुल्कम् एव औषधम् वितरन्ति।

तत्र प्रकोष्ठेषु शतशः रुग्णाः युगपत्स्थातुम् समर्थाः। तत्र अनेके परिचारकाः सेवापरायणाः। तेषु केचन निशायाम् परिचरन्ति केचन दिवसे। ते सर्वे प्रसन्नवदनाः सेवाभावेन परिचरन्ति। सेवायाः फलम् धनम् न कदा अपि भवितुम् अर्हति, सेवा एव सेवायाः फलम्।

वैद्यः अपि अत्र कुशलः। न हि सः धनलोलुपः। धनलोलुपस्य औषधम् अपि सत्वरम् प्रभावस्य उत्पादकम् न भवति। धनिकेभ्यः महार्घम् औषधम् प्रयच्छति, निर्धनेभ्यः औषधम् अमूल्यम् यच्छति। ये औषधालये औषधम् नेतुम् आयान्ति ते अपि अस्य व्यवहारेण सन्तुष्टाः व्रजन्ति। ये चिकित्सालये वसन्ति ते अपि अस्य व्यवहारेण सन्तुष्टाः। ये वृद्धाः ते अस्मै आशीर्वादान् प्रयच्छन्ति। ये समवयस्काः ते धन्यवादान् वितरन्ति। ये अल्पवयस्काः ते अस्य कुशलम् ईश्वरम् प्रार्थयन्ति। सर्वे अपि अस्य कृतज्ञाः। एतेन वैद्येन एतत् नगरम् विभाति।

अभ्यासः

(१) संस्कृत बनाओः—

प्रत्येक शहर और गांव में चिकित्सालय का होना आवश्यक है। उस चिकित्सालय के लिये बड़े मकान का होना भी जरूरी है। उस

चिकित्सालय में जाकर रोगी उसकी औषध से स्वस्थ हो जाते हैं। औषधालय के रुग्णालय में बहुत से रोगी एक साथ ठहर सकते हैं। रुग्णालय में रोगियों की सेवा के लिये सेवक होते हैं जो निःशुल्क रोगियों की सेवा करते हैं। जो मनुष्य धन के लोभी होते हैं उनका कोई आदर नहीं करता। लोभी वैद्य की औषध रोग पर अपना कोई प्रभाव नहीं करती। चिकित्सालय गरीब व अमीर सभी का उपकारक है।

(२) वाक्य पूरणम्—

सः — धनलोलुपः — । — औषधम् — प्रभावोत्पादकम् न — । — निश्शुल्कम् — अधिगच्छन्ति । — सेवायाः — सेवा एव — अर्हति । यूयम् — चिकित्सालयम् — किमु ? — नगरम् — ।

(३) प्रश्नाः—

कथम् भूतः वैद्यः श्रेष्ठः । परिचारकैः किम् आदरणीयम् । उपवैद्याः तत्र किम् आचरन्ति, सन्तुष्टाः रुग्णाः किम् इच्छन्ति ।

(४) शब्दप्रयोगः—

प्रकोष्ठम्, युगपत्, लोलुपः, महार्घम्, अल्पवयस्काः ।

पंचविंशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्य अभ्यासः)

वाचनालयः

नगरस्य अयम् प्रसिद्धः वाचनालयः । सहस्रशः जनाः अत्र प्रति-

दिनम् समाचारपत्राणि पठितुम् आगच्छन्ति। पठनस्य किम् अपि शुल्कम् नास्ति।

अस्मिन् वाचनालये दश आङ्गलभाषायाः दश आर्यभाषायाः पञ्च च अन्यासां भाषाणाम् दैनिकानि पत्राणि समायान्ति। साप्ताहिकानाम् पाक्षिकानाम् मासिकानाम् च संख्या स्वयमेव कल्पनीया। न केवलम् अत्र भारतीयाणि एव पत्राणि समायान्ति विदेशीयानाम् अपि पर्याप्ता संख्या। न केवलम् समाचारमयानि एव पत्राणि अपि तु चित्रमयानि अपि।

संस्कृतवाङ्मयस्य तु कतिपयानि एव पत्राणि यतो हि अस्य स्वल्पः प्रचारः। परम् अद्यत्वे केषाञ्चित् महानुभावानाम् प्रयासेन संस्कृतस्य अपि प्रचारः बाहुल्यम् प्राप्तः।

अस्मिन् वाचनालये पुस्तकालयः अपि अस्ति। यस्मिन् विविधनाम् विषयाणाम् सर्वासाम् च भाषाणाम् पुस्तकानि प्रायशः सन्ति। स्थूलाः ग्रन्थाः रुचिरविषयाः। ह्रस्वाः गभीरविषयाः। उच्चैः शिक्षिताः जनाः गभीरविषयम् पठन्ति। साधारणाः रुचिरविषयम्। वाचनालयेन पुस्तकालयेन च धनिकानाम् निर्धनानाम् च सर्वेषाम् एव लाभः भवति। सर्वे सर्वाणि पुस्तकानि मूल्येन आहर्तुम् न अर्हन्ति, अतः वाचनालयस्य प्रबन्धकेभ्यः धन्यवादान् यच्छामः।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

कोई भी मनुष्य सब विषयों की सब पुस्तकें मूल्य लेकर नहीं पढ़

सकता। अतः वह पुस्तकालय में जाकर निःशुल्क पुस्तकें पढ़ता है। जिससे उसका ज्ञान बढ़ता है। दूसरे नगरों के समाचार हम अपने घर पर समाचार पत्रों से जान लेते हैं। इन्द्रप्रस्थ के सार्वजनिक पुस्तकालय में डाक से अन्य नगरों से समाचार पत्र आते हैं। जनता में संस्कृत का प्रचार बहुत कम है इसलिये संस्कृत पत्रों का अभाव है। पुस्तकालय से अपने घर पर पुस्तकें लेजाकर पढ़ सकते हैं। शिक्षित लोग गम्भीर विषयक पुस्तकें पढ़ते हैं। वाचनालय में भी रविवार को अवकाश होता है।

(ख) वाक्य पूर्तिः—

— पठनस्य — शुल्कम् — । — वाचनालये — समाचारपत्राणि — । संस्कृत भाषायाः — समाचारपत्राणि — तस्याः — स्वल्पः । —प्रचारः — प्राप्तः । वाचनालयस्य — धन्यवादान् — । वाचनालयेन — उपकारः — ।

(ग) प्रश्नाः—

कीदृशः भवति वाचनालयः । के तत्र अर्हन्ति पत्राणि पठितुम् । केषाम् उपकारः अनेन ।

(घ) शब्द प्रयोगः—

पर्याप्तम्, वाङ्मयः, प्रयासेन, आङ्लभाषा ।

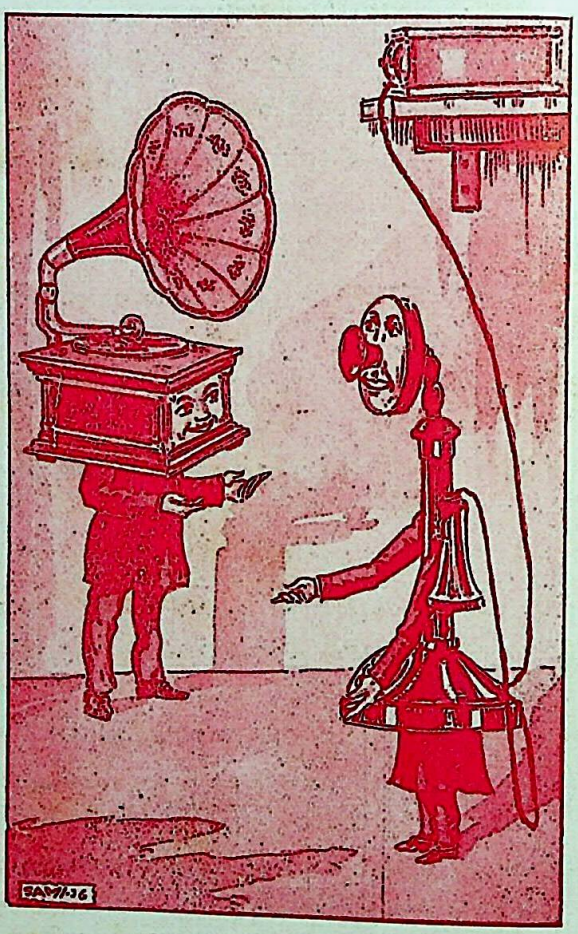

षड्विंशः पाठः

(पाठस्यमाध्यम्--अतीतस्य अभ्यासः)

विवादः

तलस्वनः*१—मित्र स्वनग्राह ! कुत्र यासि ?

स्वनग्राहः*२—स्वैरम् विचरामि, अहम् अपि प्रष्टव्यः कुत्रयासि इति ।

तलस्वनः—मित्र ! अपि स्वैरम् विचरसि ?

स्वनग्राहः—अहो अत्र अपि सन्देहः । आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ।

तलस्वनः—अहो उपहससि ? अहम् आत्मवत् पश्यामि इति कः अभिप्रायः ।

स्वनग्राहः—एष एव यत् त्वम् परतन्त्रः अतः परम् अपि परतन्त्रम् अवगच्छसि ।

तलस्वनः—कथम् अहम् परतन्त्रः ?

स्वनग्राहः—एकम् अपि पदम् चलितुम् असमर्थः अतः परतन्त्रः ।

तलस्वनः—त्वम् अपि स्वयम् गन्तुम् अशक्तः । अन्ये जनाः मृतम् इव त्वां वहन्ति कथम् त्वम् स्वतन्त्रः ।

स्वनग्राहः—अस्तु त्वम् तु परैः अपि चालयितुम् अशक्यः ।

तलस्वनः—अह ह ! एकम् एव रूपम् पश्यसि । अस्मिन् भवने चत्वारि स्थानानि यत्र अहम् प्रतिदिनम् भ्रमामि ।

स्वनग्राहः—अहो स्वल्पता स्थानानाम् । अहम् पुनः यथेच्छम् विचरामि, स्वतन्त्रः खलु अहम् ।

---

* १. Telephone. * २. Phonograph.

तलस्वनः—न केवलम् स्वतन्त्रः। अपि तु उच्छृङ्खलः। यत्र कुत्र अपि अनियन्त्रितः यासि।

स्वनग्राहः—न अत्र तव दोषः। परतन्त्रः स्वतन्त्रम् उच्छृङ्खलम् पश्यति, परतन्त्रस्य जीवनेन कः लाभः।

तलस्वनः—उच्छृङ्खलस्य ते जीवनेन कः लाभ।

स्वनग्राहः—अहम् खलु मनोहराणि गानानि श्रावयामि। त्वम् प्रायशः दुःखमयान् समाचारान् श्रावयसि।

तलस्वनः—त्वम् अपि करुणमयानि रोदनपराणि गानानि श्रावयसि अहम् पुनः कदाचित् एव शोकसमाचारम् श्रावयामि।

स्वनग्राहः—मम पुनः करुणामयेऽपि गाने आनन्दः। तव समाचारेषु तु चिन्ता एव। परतन्त्राणाम् जीवनम् चिन्तामयम भवति। स्वतन्त्राणाम् आनन्दमयम्।

तलस्वनः—अहप् दूरात् वार्ताः श्रावयामि त्वम खलु अन्तिकादेव ?

स्वनग्राहः—सत्यम्। परतन्त्रः दासः दूरात् एव वार्ताः श्रावयति। स्वतन्त्रः निर्भीकः, स अन्तिकात् एव।

तलस्वनः—हन्त! अहम् परतन्त्रः सत्वरम् एव एतत् जीवनम् त्यजामि।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

स्वतन्त्र पुरुषों का जीवन संसार में आदरणीय होता है। टेलीफोन अपने जीवन को फोने ग्राफ के जीवन से श्रेष्ठ मानता है। टेलीफोन अपने

आप एक कदम भी नहीं चल सकता। अधिक स्वतन्त्र, उच्छृङ्खल की गणना में आ जाता है। वह गायक वीर रस के गान से वीरों को प्रोत्साहित कर देता था। उच्छृङ्खल पुरुषों के जीवन से संसार के लिये कोई लाभ नहीं। वे नाट्यशाला में नट अद्भुत रस से पूर्ण गाने सुनाते थे। पराधीन मनुष्य सेवक की भांति दूर से ही बातें सुनाते हैं। टेलीफोन के द्वारा शोक समाचार सुनकर मनुष्य चिन्तामग्न हो जाते हैं। परन्तु कभी २ फोनोग्राफ से मनोहर गान सुनकर चित्त प्रसन्न हो जाता है।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

अयम् — आनन्देन — वसति। स्वातन्त्र्यम् — जन्मसिद्धः — अस्ति। परतन्त्रस्य — कः — । — इच्छन्ति — स्वातन्त्र्यम्। — शुकानाम् — धिक्। आत्मवत — यः — सः — भवति। तलस्वनः — वदति — परतन्त्रः — स्वतन्त्रः।

(ग) प्रश्नाः—

तलस्वनस्वनग्राह्योः मध्ये कः तव रुचिकरः। अनयोः विवादेन किम् ज्ञानम् अधिगच्छसि? परतन्त्रे स्वतन्त्रे च जीवने कतमम् श्रेयः कथञ्च?

(घ) शब्द प्रयोगः—

स्वैरम्, अभिप्रायेन, उच्छृङ्खलस्य, नियन्त्रिताय, निर्भीकात्।

सप्तविंशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्याभ्यासः)

धूर्तः शशकः

एकस्मिन् वने मृगेन्द्रः भासुरकः प्रतिवसति। स प्रतिदिनम्

अनेकान् मृगान् व्यापादयति । अथ एकदा सर्वे श्वापदाः सिंहस्य समीपम् समागच्छन् । एकः वृद्धः श्वापदः च तम् सिंहम् प्रार्थयत् । देव ! किम् अनेन सकलमृगाणाम् वधेन । तव क्षुधायाः उपशमः एकेन एव मृगेण भवति । प्रतिदिनम् तव भोजनाय एकः मृगः आगमिष्यति । अनेन प्रकारेण तव क्षुधायाः उपशमः, श्वापदानाम् च प्राणरक्षा भविष्यति ।

भासुरकः श्वापदानाम् प्रार्थनाम् सावधानम् आकर्णयत् । तथ्याम् च अवागच्छत् । अचिन्तयत् च एष उपायः समीचीनः अहम् अपि श्रमेण विना भोजनम् अधिगमिष्यामि । अथ स अनेन उपायेन सन्तुष्टः अभवत् । श्वापदाः अपि वृद्धम् श्वापदं धन्यवादान् अवदन् यतो हि स उपायेन तान् अरक्षत् ।

तत एकदा श्वापदेषु शशकस्य वारः समायातः । प्राणनाशेन चिन्ताकुलः सः शनैः शनैः अगच्छत् । शनैः शनैः गमनेन वेलायाः अतिक्रमः सञ्जातः । भासुरकः क्षुधया पीडितः कोपेन च रक्त-नयनः इतस्ततः भ्रमति ।

यदा लघुकलेवरम् शशकम् अपश्यत् तदा सक्रोधम् अवदत् कुतो रे नीच शशक ! वेलायाः अतिक्रमः । शशकः अवदत् देव ! अन्ये सत्वाः यदा माम् लघुकलेवरम् अपश्यन् तदा अन्यान् पञ्च-शशकान् प्रैषयन् । परम् मार्गे अपरः सिंहः प्राप्तः, सः कथयति अहम् एव अस्य वनस्य मृगेन्द्रः । चौरः सः भासुरकः न तत्र गन्तव्यम् देव ! अन्यान् शशकान् तत्र अत्यजम् ततः अत्र समा-गच्छम् । साश्चर्यम् सर्वम् वृत्तान्तम् सः भासुरकः आकर्णयत् । शशकं

च अवदत् चौरः सः सिंहः । अहम् चलामि तम् व्यापादयामि । शशकः तम् भासुरकम् कूपे अनयत् । तस्य च विम्बम् अदर्शयत् । मूर्खः भासुरकः निज प्रतिविम्बम् अपरसिंहम् अवागच्छत् । तम् व्यापादयितुम् कूपे विम्बस्योपरि परापतत् । अनश्यत् च । अहो धैर्यम् शशकस्य मौर्ख्यम् च भासुरकस्य ।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

एक वन में भासुरक नाम का शेर रहता था । वह प्रतिदिन अपने पराक्रम से जंगली (वन्य) पशुओं को मार कर खाता था । एक दिन सब जानवर मिलकर सोचने लगे, कि यह हमारा राजा सिंह, बहुत जानवरों को मार डालता है । ऐसा करने से हमारी संख्या में न्यूनता होती है । यह सोचकर वे सिंह के पास गये और प्रार्थना करने लगे सिंह उनकी प्रार्थना को सुनकर बोला कि हे श्वापदो ! आज से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं एक से अधिक किसी जानवर को न मारूंगा । सिंह के पास एक जानवर प्रतिदिन आता था और उसे खाकर शेर की भूख शान्त होती थी । एक दिन चतुर शशक की बारी आयी । और वह सिंह उस खरगोश के कहने से कूप में कूद पड़ा ।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

सिंहः — उपायेन — अभवत् । सः — शनैः — अगच्छत् । — क्षुधायाः — एकेन — श्वापदेन — । श्वापदेषु — शशकस्य

— समागतः । चौरः — अहम् — व्यापादयिष्यामि । तम् — कूपे — । — मृतः च ।

(ग) प्रश्नाः—

कार्याणि पराक्रमेण सिध्यन्ति उपायेन वा ? शशकस्य चातुर्यम् प्रशंसनीयः कथम् अस्ति ? भासुरकः कम् अबोधत् अपरम् सिंहम् ।

(घ) शब्द प्रयोगः—

श्वापदैः, उपशमाय, अतिक्रमात्, कलेवरस्य, प्रतिबिम्बेन,

अष्टाविंशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्–अतीतस्याभ्यासः)

वीरभद्रः

कस्मिन् चित् नगरे एकः वीरभद्रः वीरबालः अवसत् । प्रतिदिनम् स नगराद् बहिः विशाले शाद्वले अक्रीडत् । एकदा निशायाम् विलम्बम् यावत् तत्र क्रीडापरः अभवत् । सहसा दूरस्थम् कम् चित् चौरम् अपश्यत् । चौरात् भीतः सः, परम् साहसम् धैर्यम् च न अमुञ्चत् । क्षणान्तरे एव सः एकम् विचित्रम् उपायम् अचिन्तयत् । सः वेगेन अधावत् । समीपे एव कश्चित् कूपः अभवत् । तत्र शर्करया पादे आहतः तस्य उपकण्ठे अपतत् । धनाधानम् च कूपे प्राक्षिपत् ।

एतस्मिन् अन्तरे स चौरः तत्र समागच्छत् । अपृच्छत् च अयि

दारक ! किम् अन्विष्यसि । बालः अवदत्—मम जनकः गृहम् नेतुम् धनाधानम् अयच्छत्। अहम् अत्र क्रीडायाम् रतः अभवम्। यदा च जनकस्य आदेशम् अस्मरम् तदा चित्ते भीतः अधावम् परम् अत्र अन्धकूपे अपतम् धनाधानम् च अन्धकूपे अपातयम्। जनकः यदा स्वकीयम् धनाधानम् न अधिगमिष्यति तदा ताडयिष्यति इति चिन्ताकुलः तिष्ठामि।

चौरः अवदत्—न अत्र भयस्य कारणम् पश्यामि, सत्वरम् एव तत् धनाधानम् निस्सारयामि। इति एभिः दयापरैः शब्दैः तम् बालम् असान्त्वयत, कूपे च अवातरत्। वीरभद्रोऽपि धावनस्य अवसरम् अध्यगच्छत्, तस्मात् च स्थानात् अधावत।

चौरः अपि कूपम् जलरहितम् अपश्यत् स्वल्पेन एव कालेन नवीनम् धनाधानम् अध्यगच्छत्। चित्ते च प्रसन्नः अभवत्। परम् यदा धनाधानम् धनरहितम् अपश्यत् तदा बालस्य चातुर्यम् अवागच्छत्। चित्ते च तम् प्राशंसत्।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

कर्णपुर नामक गांव में बीरबल चौर रहता था। एक दिन वह अन्न लाने के लिये शहर को चल पड़ा। उसके पास एक भी पैसा नहीं था। रास्ते में उसने हरियाले मैदान में खेलते हुए बालक को देखा, और उसके चित्त में लोभ आगया। उसने बालक को बहकाया। परन्तु बालक

भी चतुर था। वह कुछ देर तक रोया (आक्रोश्) और फिर हंसने लगा। चोर उसके रुदन का कारण पूछने लगा। बालक ने धैर्य को रखकर कहा कि अमुक कुए में मेरा सुनहरी आभूषण गिर गया है अतः रोता हूँ और तुम निकाल दोगे यह सोचकर हंसता हूँ। चोर बोला अच्छा मुझे वह कुआं दिखाओ। बालक चोर को कुए के पास ले गया। वह कुए में घुस गया। बालक उसके वस्त्र उठा कर अपने घर भाग गया।

(ख) वाक्य पूरणम्:—

चौरः — बालकम् — । — भीतः — अपि — न अमुञ्चत् । — एव — कश्चित् — अभवत् । — अवदत् । चौरः अपि — जलरहितम् — । —चातुर्यम् — ।

(ग) प्रश्नाः—

बालः कम् उपायम् अचिन्तयत ? चौरः किमर्थम् कूपे प्रविशत । किम् तेन तत्र प्राप्तम् । चौरव्यापारः श्रेष्ठो न वा ।

(घ) शब्द प्रयोगः—

शर्करा, चित्, उपकण्ठम्, उपकण्ठे, धनाधानाय, दारकः, शाद्वले ।

एकोनत्रिंशः पाठः

(पाठस्य माध्यम्—अतीतस्य अभ्यासः)

बालकृष्णः

अवसत् कंसो नाम नृशंसो भूपः अस्मिन् भारते । सः खलु

कृष्णस्य मातुलः, कृष्णस्य जनकात् वसुदेवात् राज्यम् अपाहरत्। वसुदेवम् तस्य भार्याम् देवकीम् च कारागारे न्यपातयत्। नारदेन प्रतारितः च तस्य नवजातान् अर्भकान् प्राणैः व्ययोजयत्।

अथ दैववशात् नवजातः कृष्णः कथञ्चिद् रक्षितः कौमारम् अध्यारोहत्। कंसः अपि कथम्चित् एतत् वृत्तान्तम् अवागच्छत्। कृष्णस्य वधाय च प्रभूतान् उपायान् अचिन्तयत्। परम् कृष्णस्य हनने असमर्थः अभवत्।

अथ कदाचित् सः मल्लयुद्धम् अकारयत्। कृष्णम् च तस्य अवलोकनाय आकारयत्। कृष्णस्य पालिका अम्बा यशोदा तस्य गमनम् न आज्ञापयत्। कृष्णः बलरामस्य साहाय्येन ताम् कथञ्चित् अन्वनयत्। हस्तिनापुरे च प्राप्तः।

कंसः कृष्णम् व्यापादयितुम् द्वारे मत्तगजान् अस्थापयत्। कृष्णः अपि ब्रह्मचर्यम् अरक्षत् अतः कौमारे अपि ब्रह्मचर्यस्य बलेन गजस्य दन्तान् उदपाटयत्। गजः स चीत्कारम् अधावत्।

अनेन समाचारेण कंस भीतः। यदा कृष्णः मल्लस्थलम् प्राप्तः तदा कंसः विवर्णः जातः, अथ सः स्वमल्लेन चाणूरेण सह कृष्णस्य मल्लयुद्धम् आदिशत्। चाणूरम् च कृष्णम् हन्तुम् आदिशत्। ब्रह्मचर्यस्य मदेन मत्तः कृष्णः अपि चाणूरम् सहसा एव व्यपोथयत् प्राणैश्च व्ययोजयत्। अस्य अपराधस्य मिषेण सः कंसः कृष्णस्य वधम् आदिशत्। अत्रान्तरे निजबलेन बलरामेण च सह कृष्णः कंसम्

पञ्चत्वम् प्रापयत्। स्वकीयम् राज्यम् च अपाहरत्। अहो ब्रह्मचर्यस्यबलम्।

अभ्यासः

(क) संस्कृत बनाओः—

पूर्वकालिक नृशंस भूपालों में कंस का नाम भी प्रसिद्ध है वह प्रजा को बहुत दुःख देता था। उसने देवकी और वसुदेव को कारागार में डाल दिया था। वह अपने भानजों को पैदा होते ही मार देता था। किसी तरह से कंस के षड्यन्त्र से कृष्ण सुरक्षित रह गया। जब कंस ने यह वृत्तान्त जाना तब तो चिन्तित हुआ। उसने कृष्ण के मारने के लिये अनेक उपाय किये। एक दिन कंस ने मल्लयुद्ध कराया और कृष्ण को बुलाया। कृष्ण भी ब्रह्मचर्य से जीवन व्यतीत कर रहे थे इसलिये बलवान् थे। कृष्ण ने हस्तिनापुर जाने के लिये अपनी जननी से आज्ञा मांगी। माता ने उनके गमन को स्वीकार नहीं किया परन्तु कृष्णचन्द्र हस्तिनापुर चले ही गये।

(ख) वाक्य पूर्ति करोः—

कंसः — व्यापादयितुम् — मत्तगजान् —। अनेन — कंसः —। कंसस्य — आकर्ण्य — जनाः सन्तुष्टाः —। कृष्णः — स्वकीयम् — अपाहरत्। ये — रक्षन्ति — सबलाः —।

(ग) प्रश्नाः—

कृष्णः इति नामश्रुतम्? कोऽयम् अभवत। कीदृश सः, किम्

आचरत्। माननीयो न वा युष्माकम्। अस्यविषये किम् बोधथ

(घ) शब्द प्रयोगः—

मित्रम्, नृशंसः, चोत्कारम्, प्रतारितः, पालिका, अभंकः, सम्बोधने।

त्रिंशः पाठः

सदुपदेशः

येषां न विद्या न धनं न दानम्, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके किल भारभूताः, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥१॥
विद्या विवादाय धनं मदाय, शौर्यं परेषां परिपीडनाय।
बुधस्य नित्यं विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥२॥
अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति।
पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥३॥
शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
सज्जना न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥४॥
तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकायाश्च मस्तके।
वृश्चिकस्य विषं दन्ते सर्वाङ्गे दुर्जनस्य तद् ॥५॥

यस्यार्थाः तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।
यस्यार्थाः स नरो मान्यो यस्यार्थाः स च पण्डितः ॥६॥
पादपानाम् भयं वातात् पद्मानां शिशिरात् भयम् ।
पर्वतानाम् भयं वज्रात् विज्ञानाम् दुर्जनात् भयम् ॥७॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या महादेवता ।
विद्या बाल ! सुपूजिता न तु धनम् विद्याविहीनः पशुः ॥८॥
सर्पाः पिबन्ति पवनम् न च दुर्बलास्ते ।
शुष्कैस्तृणैः वनगजाः प्रबलाः भवन्ति ॥
कन्दैः फलैः मुनिवराः गमयन्ति कालम् ।
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ॥९॥
जयोऽस्तु पाण्डुपुत्राणां येषां पक्षे जनार्दनः ।
यतः कृष्णस्ततो धर्मः यतो धर्मस्ततो जयः ॥१०॥

अभ्यासः

(१) संस्कृत बनाओः—

पण्डित पुरुषों में प्रायः विवाद होता है। सर्प पवन के पान से हाथी तृणों के भक्षण से परम प्रबल होते हैं। वेदों का आदेश है कि आचार ही मनुष्य का प्रधान धर्म है। सत्य के ही आश्रय पर संसार का व्यवहार चल रहा है। स्वामी रामतीर्थ कर्मयोग

के विषय में प्रसिद्ध उपदेशक थे। पण्डितों का सब जगह आदर होता है राजाओं का नहीं। धनिकों को चौरों से और चौरों को राजपुरुषों से भय होता है। युद्धस्थल में पाण्डुपुत्रों की सदा विजय होवे। कर्मठ पुरुषों का परमात्मा सदा कल्याण करे।

(ख) प्रश्नाः—

(१) प्रथमश्लोके 'मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति' इत्यस्य कः भावः।

(२) ज्ञानाय, दानाय रक्षणाय च किम् किम् भवति।

(३) पादपानाम् वातात् पद्मानाम् शिशिरात् किमर्थम् भवति भयम्

(४) तृतीयश्लोकस्य भावार्थः सम्यक् वर्णनीयः

(ग) शब्द प्रयोगः—

शौर्यात्, मौक्तिकेन, विज्ञाः, वृश्चिकस्य, कन्दे, निधानम्,।

प्रदीपिकाप्रयुक्तव्याकरणम्

सुबन्त-प्रकरणे

अकारान्ताः पुल्लिङ्गशब्दाः

बाल (Boy)

	एक वचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	बालः=एक बालक	बालाः=बहुत से बालक
सम्बोधन—	हे बाल !=हे बालक	हे बालाः=हे बालको !
(द्वितीया)	बालम्=एक बालक को	बालान्=बहुत से बालकों को
(तृतीया)	बालेन=एक बालक से	बालैः=बहुत से बालकों से
(चतुर्थी)	बालाय=एक बालक के लिये	बालेभ्यः=बहुत से बालकों के लिये
(पञ्चमी)	बालात्=एक बालक से	बालेभ्यः=बहुत से बालकों से
(षष्ठी)	बालस्य=एक बालक का	बालानाम्=बहुत से बालकों का
(सप्तमी)	बाले=एक बालक में	बालेषु=बहुत से बालकों में

एवम् अन्ये अकारान्ताः पुल्लिङ्गाः शब्दाः

बालकों के लिये संकेतः—

किसी भी शब्द के रूप बिना उसके अर्थ विचारे मुख से न निकालें।

अकारान्ताः नपुंसकलिङ्गाः शब्दाः

फल (Fruit)

	एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	फलम्=एक फल	फलानि=बहुत से फल
सम्बोधन—	फल=हे फल	फलानि=हे फल
(द्वितीया)	फलम्=एक फल को	फलानि=बहुत से फलों को

शेषं पुल्लिङ्गवत्तथा हि

(तृतीया)	फलेन=एक फल से, के द्वारा	फलैः=बहुत से फलों से, के द्वारा
(चतुर्थी)	फलाय=एक फल के लिये	फलेभ्यः=बहुत से फलों के लिये
(पञ्चमी)	फलात्=एक फल से	फलेभ्यः=बहुत से फलों से
(षष्ठी)	फलस्य=एक फल का-के-की	फलानाम्=बहुत से फलों का-के-की
(सप्तमी)	फले=एक फल में पर	फलेषु=बहुत से फलों में पर

एवम् अन्ये अकारान्ताः नपुंसक लिङ्गाः शब्दाः

आकारान्ताः स्त्रीलिङ्गाः शब्दाः

बाला (Girl)

(प्रथमा)	बाला=एक लड़की	बालाः=बहुत सी लड़कियाँ
सम्बोधन—	बाले !=हे लड़की !	बालाः=हे लड़कियो !

(द्वितीया)	बालाम्=एक लड़की को	बालाः=बहुत सी लड़कियों को
(तृतीया)	बालया=एक लड़की से	बालाभिः=अनेक लड़कियों से
(चतुर्थी)	बालायै=एक लड़की के लिये	बालाभ्यः=बहुत सी लड़कियों के लिये
(पञ्चमी)	बालायाः=एक लड़की से	बालाभ्यः=अनेक लड़कियों से
(षष्ठी)	बालायाः=एक लड़की का	बालानाम्=अनेक लड़कियों का
(सप्तमी)	बालायाम्=एक लड़की में	बालासु=बहुत सी लड़कियों में

एवम् अन्ये स्त्रीलिङ्गाः आकारान्तशब्दाः

सर्वनामशब्दाः

पुलिङ्गाः अकारान्ताः शब्दाः

सर्व (All)

	एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	सर्वः=सब (पुरुष)	सर्वे=सब (पुरुष)
(द्वितीया)	सर्वम्=सब (पुरुष) को	सर्वान्=सब (पुरुषों) को
(तृतीया)	सर्वेण=सब (पुरुष) से, के द्वारा,	सर्वैः=सब(पुरुषों) से, के द्वारा
(चतुर्थी)	सर्वस्मै=सब (पुरुष) के लिये	सर्वेभ्यः=सब (पुरुषों) के लिये
(पञ्चमी)	सर्वस्मात्=सब (पुरुष) से	सर्वेभ्यः=सब (पुरुषों) से

(षष्ठी)	सर्वस्य=सब (पुरुष) का, के, की	सर्वेषाम्=सब (पुरुषों) का-के-की
(सप्तमी)	सर्वस्मिन्=सब (पुरुष) में, पर	सर्वेषु=सब (पुरुषों) में, पर

एवमेव सर्वे पुल्लिङ्गाः यत्, तत् एतत् किम् शब्दाः बोधनीयाः केवलम् प्रथमैकवचने भेदः—

तद् शब्दः

	एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	सः=वह (आदमी)	ते=वे सब (पुरुष)

अन्यत्र तत् स्थाने त भवति रूपाणि च पुल्लिङ्गसर्ववत् तथाहि—

(द्वितीया)	तम्=उस (पुरुष) को	तान्=उन सब पुरुषों को
(तृतीया)	तेन=उस (पुरुष) से	तैः=उन (पुरुषों) से
(चतुर्थी)	तस्मै=उस (पुरुष) के लिये	तेभ्यः=उन (पुरुषों) के लिये
(पञ्चमी)	तस्मात्=उससे	तेभ्यः=उन्हों से
(षष्ठी)	तस्य=उसका	तेषाम्=उन्हों का
(सप्तमी)	तस्मिन्=उसमें	तेषु=उन्हों में

यत् शब्दः

	एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	यः=जो (पुरुष)	ये=जो (पुरुष)
(द्वितीया)	यम्=जिस (पुरुष) को	यान्=जिन (पुरुषों) का

एतद् शब्दः

एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) एषः=यह (पुरुष)	एते=ये सब (पुरुष)
(द्वितीया) एतम्,=इस (पुरुष) को	एतान्=इन (पुरुषों) को

शेषम् सर्ववत्

किम् शब्दः

एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) कः=कौन (पुरुष)	के=कौन (पुरुष)
(द्वितीया) कम्=किस (पुरुष) को	कान्=किन (पुरुषों) को

शेषम् सर्ववत्

नपुंसक लिङ्गाः अकारान्ताः शब्दाः

तद् (That)

नपुंसक लिङ्गेऽपि केवलं कर्तृकर्मणोः एव भेदः तथाहि

एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) तत्=वह	तानि=वे सब
(द्वितीया) तत्=उसको	तानि=उन सब को

शेषम् पुल्लिङ्गवत् तथाहि

(तृतीया) तेन=उससे, के द्वारा	तैः=उन, से, के द्वारा
(चतुर्थी) तस्मै=उसके लिये	तेभ्यः=उन्हों के लिये
(पञ्चमी) तस्मात्=उस से	तेभ्यः=उन से
(षष्ठी) तस्य=उसका, के, की	तेषाम्=उन्हों, का, के, की
(सप्तमी) तस्मिन्=उसमें, पर	तेषु=उन्होमें, पर

यत् शब्दः

एक वचनम्	बहु वचनम्
(प्रथमा) यत्=जो	यानि=जो सब
(द्वितीया) यत्=जिसको	यानि=जिन (सब) को

शेषम् पूर्ववत

एतत् शब्दः

एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) एतत्=यह	एतानि=ये सब
(द्वितीया) एतत्=इसको	एतानि=इन सब को

शेषम् पूर्ववत

किम् शब्दः

एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) किम्=कौन	कानि=कौन (सब) से
(द्वितीया) किम्=किसको	कानि=किन को

शेषम् पूर्ववत

स्त्रीलिङ्गाः आकारान्ताः शब्दाः

सर्वा (All)

एक वचन	बहु वचन
(प्रथमा) सर्वा=सब (स्त्री जाति)	सर्वाः=सब (स्त्रियां)
(द्वितीया) सर्वाम्=सब (स्त्री ,,) को	सर्वाः=सब (स्त्रियों) को

(तृतीया)	सर्वया:=(सब स्त्री ,,) से	सर्वाभि:=सब (स्त्रियों) से
(चतुर्थी)	सर्वस्यै=सब (स्त्री ,,) के लिये	सर्वाभ्य:=सब (स्त्रियों) के लिये
(पञ्चमी)	सर्वस्या:=सब (स्त्री ,,) से	सर्वाभ्य:=सब (स्त्रियों) से
(षष्ठी)	सर्वस्या:=सब (स्त्री ,,) का	सर्वासाम्=सब (स्त्रियों) का
(सप्तमी)	सर्वस्याम्=सब (स्त्री ,,) में	सर्वासु=सब (स्त्रियों) में

एवम् अन्ये अपि स्त्रीलिङ्गा: सर्वनाम शब्दा:, केवलमेकवचने भेद: तकारस्य सकारो भवति, स्त्री लिङ्गे च आ प्रत्ययो भवति रूपाणि च सर्ववत् तथाहि—

	एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	सा=वह (स्त्री)	ता:=वे (स्त्रियां)
(द्वितीया)	ताम्=उस (स्त्री) को	ता:=उन (स्त्रियों) को

शेषम् सर्ववत

यत् शब्द:

	एक वचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	या=जो (स्त्री)	या:=जो (स्त्रियाँ)
(द्वितीया)	याम्=जिस (स्त्री) को	या:=जिन (स्त्रियों) को

शेषम् सर्ववत

यत् शब्द:

	एक वचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा)	एषा=यह (स्त्री)	एता:=ये (स्त्रियाँ)

(द्वितीया) एताम्=इस (स्त्री) को एताः=इन (स्त्रियों) को

शेषम् सर्वावत

किम् शब्दः

एक वचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) का=कौन (स्त्री)	काः=कौनसी (स्त्रियाँ)
(द्वितीया) काम्=किस (स्त्री) को	काः=किन (स्त्रियों) को

शेषम् सर्वावत्

(सर्वेषु लिङ्गेषु समानः शब्दः)

अस्मद् (we)

एक वचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) अहम्=मैं	वयम्=हम सब
(द्वितीया) माम्=मुझ को	अस्मान्=हम सब को
(तृतीया) मया=मुझ से	अस्माभिः=हम सब से
(चतुर्थी) मह्यम्=मेरे लिये	अस्मभ्यम्=हम सब के लिये
(पञ्चमी) मत्=मेरे से	अस्मत्=हम सब से
(षष्ठी) मम=मेरा	अस्माकम्=हम सब का,के,की
(सप्तमी) मयि=मेरे में	अस्मासु=हम सब में

(सर्वेषु लिङ्गेषु समानः)

युष्मद् (you)

एकवचनम्	बहुवचनम्
(प्रथमा) त्वम्=तू	यूयम्=तुम सब

(द्वितीया) त्वाम्=तुझ को	युष्मान्=तुम सब को
(तृतीया) त्वया=तुझ से	युष्माभिः=तुम सब से
(चतुर्थी) तुभ्यम्=तेरे लिये	युष्मभ्यम्=तुम सब के लिये
(पञ्चमी) त्वत्=तेरे से	युष्मत्=तुम सब से
(षष्ठी) तव=तेरा	युष्माकम्=तुम सब का, के, की
(सप्तमी) त्वयि=तेरे में	युष्मासु=तुम सब में

तिङन्त प्रकरणम्

पठ् धातु लट् लकारः

(वर्तमान कालः)

	एक वचनम्	बहुवचनम्
प्रथमः पुरुषः—	पठति=(वह) पढ़ता है	पठन्ति=(वे) पढ़ते हैं
मध्यमः पुरुषः—	पठसि=(तू) पढ़ता है	पठथः= तुम) सब पढ़ते हो।
उत्तमः पुरुषः—	पठामि=(मैं) पढ़ता हूं	पठामः=(हम) सब पढ़ते हैं

पठ् धातु लट् लकारः

(भविष्यत् कालः)

	एकवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः—	पठिष्यति=(वह) पढ़ेगा	पठिष्यन्ति=(वे) सब पढ़ेंगे

मध्यम पुरुष—पठिष्यसि=(तू) पढ़ेगा पठिष्यथः=(तुम) सब पढ़ोगे
उत्तम पुरुष—पठिष्यामि=(मैं) पढ़ूंगा पठिष्यामः=(हम) सब पढ़ेंगे

पठ् धातु लङ् लकारः

(भूत कालः)

प्रथम पुरुष—अपठत्= अपठन्=
(वह) पढ़ता था, वा पढ़ा (वे सब) पढ़ते थे, वा पढ़े
मध्यम पुरुष—अपठः= अपठत=
(तू) पढ़ता था वा पढ़ा (तुम सब) पढ़ते थे, वा पढ़े
उत्तम पुरुष—अपठम्= अपठाम=
(मैं) पढ़ता था, वा पढ़ा (हम सब) पढ़ते थे, वा पढ़े

———

अथ कृदन्तप्रकरणम्

धातु	क्त प्रत्यय	अर्थ	तव्य	अनीयर	य	अर्थ
गै	गीत	गाया हुआ	गातव्य	गानीय	गेय	गाना चाहिये या गाने योग्य
स्था(तिष्ठ)	स्थित	ठहरा हुआ	स्थातव्य	स्थानीय	स्थेय	ठहरना ,, या ठहरने योग्य
हृ (हर्)	हृत	हरा हुआ	हर्तव्य	हरणीय	हार्य	लेने योग्य या लेना चाहिये
वर्ण्	वर्णित	कहा हुआ	वर्णितव्य	वर्णनीय	वर्ण्य	कहना चाहिये या कहने योग्य
पठ्	पठित	पढ़ा हुआ	पठितव्य	पठनीय	पाठ्य	पढ़ना चाहिये या पढ़ने योग्य
कथ्	कथित	कहा हुआ	कथितव्य	कथनीय	.....	कहना ,, या कहने योग्य
गम्	गत	गया हुआ	गन्तव्य	गमनीय	गम्य	जाना चाहिये या जाने योग्य
चर्	चरित	चरा हुआ	चरितव्य	चरणीय	चर्य	चरना ,, या चरने योग्य

धातु	क्त प्रत्यय	अर्थ	तव्य	अनीयर	य	अर्थ
चल्	चलित	चला हुआ	चलितव्य	चलनीय	चाल्य	चलना चाहिये या चलनेयोग्य
त्यज्	त्यक्त	छोड़ा हुआ	त्यक्तव्य	त्यजनीय	त्याज्य	छोड़ना ,, या छोड़ने योग्य
दृश् (पश्य)	दृष्ट	देखा ,,	द्रष्टव्य	दर्शनीय	दृश्य	देखना ,, या देखने योग्य
दा (यच्छ)	दत्त	दिया ,,	दातव्य	दानीय	देयम्	देना ,, या देने योग्य
नम्	नत	झुका हुआ	नन्तव्य	नमनीय	नम्य	झुकना ,, या झुकने योग्य
पत्	पतित	गिरा हुआ	पतितव्य	पतनीय	पात्य	गिरना ,, या गिरने योग्य
पा (पिब्)	पीत	पिया हुआ	पातव्य	पा नी	पेय	पीना ,, या पीने योग्य
बुध्	बुद्ध	जाना हुआ	बोद्धव्य	बोधनीय	बोध्य	जानना ,, या जानने योग्य
वस्	उषित	रहा हुआ	वस्तव्य	वसनीय	वास्य	रहना ,, या रहने योग्य

सङ्केतः

कृदन्तशब्दानां रूपाणि लिङ्गानुसारम् भवन्ति यथा —

पुल्लिङ्गे

अकारान्तः पठित शब्दः

(प्रथमा)	पठितः=पढ़ा हुआ	पठिताः=पढ़े हुए
(द्वितीया)	पठितम्=पढ़े हुए को	पठितान्=पढ़े हुओं को
(तृतीया)	पठितेन=पढ़े हुए से	पठितैः=पढ़े हुओं से

इत्यादि बालवत्

नपुंसक लिङ्गे

(प्रथमा)	पठितम्=पढ़ा हुआ	पठितानि=पढ़े हुए
(द्वितीया)	पठितम्=पढ़े हुए को	पठितानि=पढ़े हुओं को
(तृतीया)	पठितेन=पढ़े हुए से	पठितैः=पढ़े हुओं से

इत्यादि फलवत्

स्त्री लिङ्गे

आकारान्तः पठिता शब्दः

(प्रथमा)	पठिता=पढ़ी हुई	पठिताः=पढ़ी हुई
(द्वितीया)	पठिताम्=पढ़ी हुई को	पठिताः=पढ़ी हुइयों को
(तृतीया)	पठितया=पढ़ी हुई से	पठिताभिः=पढ़ी हुइयों से

इत्यादि बालावत्

अव्यय प्रकरणम्

(Indeclinable)

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु, यन्नव्ययति तदव्ययम् ॥

एव=ही only
सत्वरम्=जल्दी soon
चेत्=यदि if
प्रति=ओर towards
युगपत्=एक साथ at a time
कदा=कब when
अपि=भी also
न=नहीं no
स्वयम्=खुद self
प्रायशः=अक्सर often
च=और and
स्वैरम्=स्वतन्त्र free
अहो=आश्चर्य oh
इति=इस प्रकार, इसलिये, समाप्ति
यत्र=जहां
पुनः=फिर again
यदा=जब when
एकदा=एक बार once
चित्=अनिश्चित् uncertain
सहसा=एक दम suddenly
अयि=अरे O
तदा=तब then
उच्चैः=ऊँचा high
सर्वत्र=सब जगह all where
कुत्र= कहां where
ततः=इसके बाद then
अथ= ,, ,, ,,
रे=अरे O
पश्चात्=पीछे after wards
अस्तु=अच्छा well
तत्र=वहां there
इत्थम्=इस प्रकार
किमु=क्या whether
वा=या or

परस्परम्=आपस में within
प्रत्यहम्=प्रति दिन daily
यथा=जैसे so
तथा=ऐसे, और as
अधुना=अब now
आम, ओम्=हाँ
ननु=आशङ्का whether
तु=तो
यतः=क्योंकि because
परम्=परन्तु but
किल=निश्चय surely
नित्यम्=सदा always

शब्दार्थ कोशः

(Vocabulary)

अनलः=आग
अम्लम्=खट्टा
अनध्यायः=छुट्टी
अशक्तः=लाचार
अर्भकः=बालक
अन्तिके=नज़दीक
अश्लीलम्=गन्दा
अनियन्त्रितः=नियमों में न रहने वाला
अल्पवयस्कः=छोटी उम्र वाला
अनुलेपः=लिफाफा Envelop
अजार्तनः=नई सड़क Egerton Road
आदेशः=हुक्म
आरामः=बाग
आवासः=घर

आच्छन्नम्=ढका हुआ
आङ्गलभाषा=अंग्रेजी
आशुयानम्=मोटर
उपाख्यानम्=कथानक
उपवैद्यः=कम्पाउण्डर
उच्छृङ्खलः=आवारागर्द
उपशमः=शान्ति
उपस्कारः=मसाला
कलेवरम्=देह
कलहः=लड़ाई झगड़ा
कन्दः (म्)=जड़
काकपक्षः=जुल्फ
कारागारः=जेलखाना
कुब्जः=कुबड़ा
कौशेयम्=रेशमी वस्त्र
कौमारम्=कुमार अवस्था
कृष्णमरीचकम्=काली मिर्च
कृशः=दुबला
खल्वाटः=गञ्जा
गिरिजागृहम्=गिरजाघर
गौराङ्गदेशः=यूरोप
घातकः=विनाशकारी
चलम्=चन्चल
चण्डः=तीव्र
चन्द्रिकाचतुष्पथः=चांदनी चौक
चातुर्यम्=बुद्धिमानी
जीवालयः=अजायबघर
टीकितम्=टिकट
तारतम्यम्=ताँता
तुङ्गः=उन्नत
तूलतन्तुमयम्=सूती वस्त्र
दन्तधावनम्=दातुन
दारकः=बच्चा
दैनिकम्=रोजाना
धनाधानम्=बटुआ
धूसरः=भूरा
धौर्त्यम्=धूर्तता
नवनीतम्=मक्खन
निदाघः=गर्मी का मौसम
नृशंसः=क्रूर

पण्यम्=दुकान
परिमार्जितम्=विशुद्ध
पद्मम्=कमल
पदातिपथः=पटरी Foot path
पर्याप्तम्=काफी
पदार्थजातम्=बहुत सी चीजें
पणकम्=पैसा
परत्र (अव्यय) =दूसरी जगह
पत्रहारः=डाकिया
पारिवेशिकः=पड़ोसी
पालिका=धाय
पाक्षिकम्=१ पक्ष में होने वाला
पायसम्=खीर

पितृव्यः=चाचा
प्रहेयम्=भेजने लायक
प्रयासः=परिश्रम
प्राकृतिकम्=कुदरती
प्रसन्नतोया=निर्मल जल वाली
भागिनेयः=भानजा
भीरुकः=डरपोक
भास्करः=सूर्य
बधिरः=बहरा

बिम्बम्=परछाईं
मज्जितम्=मस्जिद
मसृणमुखाः=चिकने मुँह वाले
मुद्गरम्=मोगरी
मूकः=गूंगा
रसालम्=आम
रामठम् (:) =हींङ्ग
राष्ट्राधिनायकः=राष्ट्रपति
लज्जास्पदम्=शर्मनाक
वदनम्=मुख
वज्रलेपः=पत्थर की लकीर (प्लस्तर)
वारः=नम्बर, पर्याय
वाचनालयः=रीडिंग रूम
Reading Room
वात्सल्यम्=पुत्र प्रेम
वाङ्मयम्=बोलता Talking
वृकः=भेड़िया
वृश्चिकः=बिच्छू
विपरीतम्=उलटा
विप्रकर्षः=फासला
विचक्षणः=बुद्धिमान्
विटपः=पेड़
विहगः=पक्षी

व्यासपीठः=प्लेट फार्म
वितरणम्=बांटना
संयावः=हलुआ
समीचीनम्=ठीक
संस्था=Institution
समवयस्कः=बराबर वाला, हमजोली
सर्वभूताः=सब प्राणी
सदस्यः=मेम्बर Member
सुधालिप्तम्=कलई किया हुआ
शर्करा=रोड़ा
श्वापदः=जानवर
श्रान्तः=थका हुआ
शाद्वलम्=घास lawn
शिशिरः=शीतकाल
शुभम्=अच्छा
शौर्यम्=वीरता